ठहरो ! ऐसे चलो.....

प्रवचनकार
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी
आचार्य श्री १०८ वसुनंदी जी मुनिराज

प्रकाशक
गजेन्द्र ग्रन्थमाला
सहयोगी प्रकाशक
निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला

प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी महाराज के ३०वें दीक्षा दिवस के अवसर पर प्रकाशित

कृति : ठहरो ! ऐसे चलो.....

मंगलाशीष : श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

प्रवचनकार : आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज

संपादन : मुनि प्रज्ञानंद

प्राप्ति स्थान : निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, कामां, भरतपुर, बौलखेड़ा (राज.)
गजेन्द्र ग्रन्थमाला, 47, I फ्लोर, विजय व्लाक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 दू. 40395480

संस्करण : द्वितीय सन् 2018

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : 50.00 रुपये

मुद्रक : एन.एस. एन्टरप्राईजिज
2578, गली पीपल वाली,
धर्मपुरा, दिल्ली-110006
दूरभाष : मोबाईल : 9811725356, 9810035356
e-mail : swaneeraj@rediffmail.com

पुरोवाक्

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति के शिखर को प्राप्त करना चाहता है, अंशुमाली की तरह प्रकाशमान होना चाहता है, सफलता पाना चाहता है परन्तु कठिनाई तो यह आती है कहाँ, कैसे और कब ? जिस स्थान पर व्यक्ति पहुँचना चाहता है पहले वह उस स्थान को निश्चित कर ले, फिर उस सफर को तय करना है यह जान ले इसके पश्चात् ''जब जागो और तभी सवेरा'' कहावत के अनुसार उसी समय मंजिल की ओर बढ़ना प्रारंभ कर दे। व्यक्ति में साहस, उमंग, धैर्यादि गुणों का होना आवश्यक है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने ''णंदिणंद सुत्तं'' में कहा है-

उज्जमो साहसो धीरो, बलं बुद्धी परक्कमो
सडेदे विज्जदे जत्थ, तत्थ देवो वि संकदे॥

अर्थात् जिस नर में परिश्रम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम ये 6 गुण हैं वहाँ देव भी व्यवधान करने में संकोच करते हैं। लक्ष्य को पाने की तितिक्षा व्यक्ति को उसकी मंजिल के करीब पहुँचा देती है, जीत हर व्यक्ति को प्यारी है हर व्यक्ति जीतना चाहता है परन्तु उसको कैसे प्राप्त किया जाता है यह नहीं जानता। लक्ष्य तो बहुत लोगों का एक हो सकता है, कुछ उसे प्राप्त कर लेते हैं और कुछ असमर्थ हो जाते हैं, परन्तु कहा है ''जीतने वाले कोई अलग कार्य नहीं करते बल्कि उसी कार्य को अलग ढंग से करते हैं।''

संसार में प्रत्येक पदार्थ उभय शक्ति से युक्त होता है जो वस्तु उत्थान का कारण बनती है वही पतन का कारण भी बन सकती है, जिन सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर जाया जा सकता है उन्हीं के माध्यम से नीचे भी उतरा जा सकता है। तलवार से स्व-पर की रक्षा भी की जा सकती है और उससे किसी का घात करके उसका दुरुपयोग भी

किया जा सकता है। संसार में वस्तुओं की कमी नहीं उसके सदुपयोग की कमी है।

वही व्यक्ति दुनियाँ में आदर्श बनता है जो उसका सदुपयोग करना सीख जाता है। प्रस्तुत पुस्तक **''ठहरो! ऐसे चलो''** प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानापयोगी आचार्य गुरुदेव 108 श्री वसुनंदी जी महाराज के उन प्रवचनों का संकलन है जिसके माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने लोगों का सम्यक् मार्ग निर्देशन किया। यूनिवर्सिटी एवं कॉलेज में स्टूडेंट्स को अपने उपदेशों के माध्यम से वह अमोघ शक्ति प्रदान की जिससे वे अपनी मंजिल तक अविराम पथिक की भाँति गमन करें। पुस्तक का नाम **''ठहरो! ऐसे चलो''** रखने का उद्देश्य है कि पहले जो व्यक्ति अंधाधुन भाग रहा है वह रुके, ठहरे, देखे वह किस दिशा में भाग रहा है कहीं कोल्हू के बैल की तरह चक्कर ही तो नहीं लगा रहा, कहीं जाना तो पूर्व में है और पश्चिम में तो नहीं दौड़ रहा। पहले वह व्यक्ति ठहरे और फिर जाने उसे किस ओर चलना है, मंजिल की ओर बढ़ना भी एक कला है। इस कला को प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से जानने व सीखने का प्रयास कर अपनी मंजिल को पाना कठिन नहीं होगा। जिन्हें साक्षात् गुरुवर श्री के अमृतमयी वचनों को सुनने का सौभाग्य मिला उन्हें तो अंधेरे मार्ग में मानो प्रकाशपुंज मिला है। मैं चाहता हूँ कि जो लोग उस समय उसे सुनने के लिए वहाँ उपस्थित नहीं थे उन तक भी ये पीयूष वचन पहुँचे। गुरुवर श्री की यह प्रवचन मालिका व्यक्ति को राह की भटकन से हटाकर पुनः मंजिल की ओर प्रेरित करने के लिए संजीवनी के समान है।

प्रस्तुत पुस्तक में गुरुवर श्री के प्रवचनों का संकलन किया गया है, यदि इसके संकलन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से इसका अध्ययन करें। इस कृति की पांडुलिपि तैयार करने में, मुद्रण व प्रकाशन में सहयोगी सभी धर्म

स्नेही बंधुओं को पूज्य गुरुदेव का मंगल शुभाशीष। गुरुवर श्री का संयमपथ सदैव आलोकित हो। उनकी साधना सदा ही वर्द्धमान अवस्था को प्राप्त हो। शताधिक वर्षों तक संयम व ज्ञान की सुगंधि से जन-जन को सुगंधित करते रहें तथा अपने लक्ष्य मोक्ष को शीघ्र ही प्राप्त करें। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के चरणों में सिद्ध, श्रुत व आचार्य भक्ति सहित त्रिकाल नमोस्तु....

जैनम् जयतु शासनम्
श्री शुभमिती आश्विन कृष्ण 9
वीर निर्वाण संवत् 2544
श्री जिनशासन तीर्थ, क्षेत्र
अजमेर, राज.

गुरु पद पद्म भ्रमर
मुनि प्रज्ञानंद
3 अक्टूबर 2018 बुधवार

सफलता की राहें

धर्मस्नेही सत् श्रद्धालु, पुण्यात्मा महानुभाव ! संसार का प्रत्येक प्राणी अपने जीवन में एक कामना और भावना रखता है कि मुझे मेरे कार्य में सफलता मिले, किंतु अकेली भावना से सफलता नहीं मिलती, उसके लिये साधना की आवश्यकता होती है। सफलता जिन साधनों से संभावित है, उनका ही सहारा लेने से सफलता मिलेगी, अन्य कारणों से नहीं। यह हमारे और आपके ऊपर निर्भर है कि हम उन साधनों का सहारा लेने में समर्थ हैं या नहीं, यदि समर्थ हैं तो सफलता हमारी मुट्ठी में है, यदि समर्थ नहीं हैं तो यावज्जीवन किसी के गीत गाते रहें या यावज्जीवन पछताते रहें या किसी की आधीनता सहन करते रहें किन्तु इससे सफलता नहीं मिल सकती, हमारी सफलता हमारे पास थी, है और रहेगी, आवश्यकता है उसे प्रकट करने की।

जैसे स्वर्ण पाषाण में सोना है, जब भी मिलेगा उसी में से निकलेगा, आवश्यकता है उसको तोड़कर के तपाकर के, गलाकर के उसकी किट्ट कालिमा को दूर करके शुद्ध सोना निकालने की। उसकी जो विधि है उस विधि से ही प्राप्त होगा अन्य विधि से सोना प्राप्त नहीं होगा। उस सोने को काटने से, छाँटने से डरोगे कि सोना कहीं जल न जाये तो कभी शुद्ध सोना प्राप्त न हो पायेगा। विधि का आश्रय तो लेना ही पड़ेगा, विधि के विधान का उल्लंघन कौन कर सकता है? जो स्वयं विधाता रहे, ईश्वर रहे, ब्रह्मा करे, वे भी तो विधि के विधान का उल्लंघन नहीं कर सके, कर्म के बंधन में जब तक बंधे रहे, तब तक वे कर्मों का फल भोगने के लिये मजबूर रहे। कर्मों की बेड़ी जब तोड़ी, कर्मों को नशाया, संयम, साधना और तपस्या के माध्यम से तभी शाश्वत सुख प्राप्त किया।

यदि महलों में रहते तो वे कर्मों को नष्ट नहीं कर पाते, वे भी शाश्वत सिद्धि, शाश्वत सफलता को प्राप्त नहीं कर पाते। कुंभकार मटका बनाता है बनाने से पहले सौ बार सोचता है, मटका कैसा बनाना है? पहले कल्पना में मटका बनाता है जब कल्पना में बन जाता है, तब उसके लिये Raw material जो चाहिये उसे प्राप्त करता है, उसके उपरांत जो सामान उसके लिए नियामक होता है उस नियामक सामान को प्राप्त करता है, इसके पश्चात् काम करना प्रारंभ करता है और इसमें भी बड़ी सावधानी रखता है, यदि कहीं चूक जाये तो मटका बन ही न पाये, चाहे मिट्टी भी चिकनी है, अच्छी है, कुंभकार भी अच्छा है, चाक भी है, पानी भी है, सब कुछ होते हुए भी यदि कुंभकार का मन नहीं लग रहा चूक गया, तो भी मटका टेड़ा-मेड़ा हो जायेगा, सही नहीं बन पायेगा, इसलिये निष्प्रमाद दशा आवश्यक है।

मातायें, बहनें रसोई में जाने से पहले भी सोचती हैं-आज क्या बनाना है? ऐसा नहीं है-जो बन जाये सो ठीक है, जो इस आधार पर निर्भर रहता है, जो मिल जाये सो ठीक है, जीवन में जो मिल जाये संतुष्टि है, तो उसे जीवन में ऐसा कुछ नहीं मिल पाता, जिससे उसका जीवन सफल और सार्थक माना जाये। जिसने भी जीवन सफल और सार्थक किया है, नि:संदेह ऐड़ी से चोटी तक पसीना बहाया है, रातों की नींद उड़ाई है, दिन का चैन खोया है, तब वह सफलता के द्वार तक पहुँचा है, तभी संसार ने उसके कदमों को चूमा है उसके चरणों की रज को अपने माथे से लगाया है।

महानुभाव ! सफलता न असंभव है, न असाध्य है, न दुर्लभ है, न दु:साध्य है किन्तु उनके लिये जिनके कंधे बहुत मजबूत हैं, जो बहुत साहसी और सफलता प्राप्त करने के लिये धुन के पक्के हैं,

उनके लिये सफलता बांये हाथ का खेल है किंतु जो पुरुषार्थ करने में कमजोर हैं, किसी विरोध को सहन करने की शक्ति नहीं है, नाम सुनते ही वहाँ से भाग जाते हैं, जिन्हें सही उपाय समझ नहीं आ रहा है जो अपने साथियों से सहयोग नहीं ले सकते, जो उस वस्तु का सही सदुपयोग नहीं कर सकते, उनके लिये हाथ में रखी सफलता भी अभिशाप बन जाती है।

सफलता के मायने केवल इतना ही नहीं है कि मैं किसी की आँखों में धूल झोंककर के सफलता प्राप्त कर लूँ, सफलता पाने के मायने तो उस वस्तु को प्राप्त करने का सही तरीका है। उसी सही तरीके के अनुसार मैं अपनी अपेक्षित सफलता जिसका मैं पूर्ण अधिकारी हूँ, संसार की कोई भी शक्ति उसे छीन नहीं सकती और वह वस्तु, वह सफलता मेरे पास ही आयेगी, उस पर मैं ठोकर मारूँ तब भी मुझे छोड़कर न जायेगी, जिस साधक ने तपस्या कर कर्मों को जला दिया है, क्या मुक्ति उसे नहीं मिलेगी?

वह साधक अब मना भी करे कि मैं मोक्ष नहीं चाहता, तो मुक्ति कहेगी–जब मोक्ष नहीं चाहते तो काहे के लिये तपस्या की, अब तो कर्मों का क्षय हो गया, अब तो तुम्हें मुक्ति मिलेगी ही मिलेगी। ज्ञानावरणी कर्म का क्षय कर दिया अब कहते हो मैं केवलज्ञानी नहीं बनना चाहता, मेरे पास तो क्षायोपशमिक ज्ञान ही अच्छा था, तो भईया तुमने तपस्या की तो सफलता तो अवश्य मिलेगी, ऐसे ही जिस कार्य में जो नियामक विधि है उसका अनुपालन करके, सेवन करके सफलता मिलती है, उस सफलता को संसार की कोई भी ताकत छीन नहीं सकती, रोक नहीं सकती।

जो सफलता आपने सम्यक् पुरुषार्थ में कुछ कमी करके प्राप्त कर ली, जितना मूल्य चुकाना चाहिये, उतना नहीं चुकाया है, तो सफलता तुम्हारी संदिग्ध है, उस सफलता को तुमसे कोई छीन सकता

है, उतनी ही मिलेगी जितना मूल्य चुकाया है, वही तुम्हारी है, जिसका मूल्य नहीं चुकाया है, वह सफलता तुम्हारी है ही नहीं, दूसरे की है और दूसरे की है तो आज नहीं तो कल चली जायेगी। चाहे लक्ष्मी के संबंध में हो, चाहे ज्ञान के संबंध में हो, चाहे किसी और उच्च पद की प्राप्ति के संबंध में हो, चाहे जीवन के किसी भी विभाग में देख लेना, जिस सफलता के तुम योग्य करते हो उसको कोई छीन नहीं सकता और जिसके लिये तुम लायक ही नहीं हो, योग्य ही नहीं हो तो सफलता तुम्हारे पास कैसे ठहर पायेगी? सिंहनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही ठहर सकता है, लोहे के पात्र में भर भी लोगे तो छेद करके बाहर निकल जायेगा।

पारा कभी पचता नहीं है चीर करके बाहर निकल जायेगा, यदि पारे को आपने भस्म बना लिया है, तो भस्म तुम्हें पच जायेगी, शक्तिवर्धक होगी, ऐसे ही आप सोचो कि पारा खाकर ज्यादा ताकत आ जायेगी तो न खा पाओगे, हीरे को सोचो-कि ऐसे ही खा जाओ तो छेद करके बाहर निकल जायेगा, अगर उसकी भस्म तपाकर के, शुद्ध करके लोगे, बहुत ताकत आयेगी, सोना यदि ऐसे ही खा लोगे तो वह पेट में फंस जायेगा, वह आपके लिये खतरनाक होगा यदि भस्म बनाकर ग्रहण करोगे तो शरीर सोने की तरह चमकता हुआ दिखाई देगा।

कितना भी तेज क्रोध आता हो चांदी की भस्म ग्रहण करोगे तो परिणाम शांत होंगे, कोई लाख कोशिश करे तुम्हें क्रोध दिलाने की किन्तु तुमको गुस्सा आयेगा नहीं। कहने का आशय ये है कि विधि जो दी है, उसका पूरा ख्याल रखना है, थोड़ी कहीं चूक गये ब्याज निकालने में तो ब्याज तो नहीं निकलेगा मूलधन भी चला जायेगा, Maths के questions को solve करने के भी methods हैं। जो रास्ता सीधे मंजिल तक पहुँचाने वाला हो और आप चलते-चलते एक

कदम भी कहीं मुड़ गये तो भटक जाओगे, कहीं ओर पहुँच जाओगे। ऐसे ही जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये नियामक सूत्र हैं, हो सकता है वे सूत्र आपको भी पसंद आ जायें, और न भी पसंद आये तो मुझे इस बात का गम भी नहीं-क्यों?

क्योंकि जो सफलता के सूत्र मेरे दिमाग में create हुये वे मेरी सफलता के लिये पर्याप्त हैं, दूसरों की सफलता के लिये पर्याप्त हों या न हों, यदि वे समर्थ हैं आपको सफलता दिलाने में तब तो ग्रहण करने के योग्य हैं, यदि नहीं हैं तो पुनः आप उन्हें संशोधन कर सकते हो, संशोधन करने का आपको पूरा अधिकार है, तो सफलता प्राप्त करने के लिये सबसे पहले हमारे दिमाग में ये बात आनी चाहिये।

हम सफलता किसे मान रहे हैं :-किस चीज को हम सफलता मान रहे हैं, हमारी सफलता क्या है? जिसे हम सफलता मान रहे हैं क्या उसके बारे में अच्छी तरह जान लिया है? किसी के लिए सफलता का मतलब पद-प्रतिष्ठा हो सकता है, किसी के लिये सफलता का मतलब सेहत, पारिवारिक खुशी या अन्य कुछ भी हो सकता है। परंतु वास्तव में सफलता है क्या?

मूल्यवान् लक्ष्य की लगातार प्राप्ति का नाम ही सफलता है

अर्ल नाइर्टेंगल

सफलता कोई लक्ष्य नहीं बल्कि एक सफर है। जिस सफर में व्यक्ति सम्यक् लक्ष्यों को निर्धारित करता है और पुनः उनको प्राप्त करता चला जाता है।

If you really want to succeed, form the habit of doing things that failures do not like to do.

अकबर, बीरबल के विषय में कौन नहीं जानता। बीरबल जिसकी बुद्धिमानी के विषय में आज भी अनेक कहानियाँ पढ़ने में

आती हैं। अकबर कैसे भी प्रश्न क्यों न पूछे पर उन सबका उत्तर बीरबल के पास होता था। बीरबल की बुद्धिमानी को देखकर अकबर दंग रह जाता था। एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा-''बीरबल तुम्हारे गुरु कौन हैं?'' बीरबल ने उत्तर दिया ''विश्व के मूर्ख लोग''। अकबर सुनकर स्तब्ध सा रह गया कि इतना बुद्धिमान व्यक्ति, मूर्खों को अपना गुरु बता रहा है। अकबर ने पूछा कैसे? वह बोला ''मैं मूर्खों को देख लेता हूँ, जिस कार्य को करने से वे मूर्ख कहलाते हैं, उन कार्यों को मैं नहीं करता।' बस जिस कार्य को असफल लोग नहीं कर रहे, उसे करना है और जिस कारण से वे असफल हो रहे हैं, उस कार्य को करना छोड़ देना है।

मुझे नहीं मालूम की कामयाबी पाने की कुंजी क्या है, पर हर आदमी को खुश करने की कोशिश करना ही नाकामयाबी की कुंजी है।

-बिल कॉस्बी

महानुभाव ! कामयाबी का मतलब यह नहीं कि हर इंसान आपको पसंद करे बल्कि कुछ लोग आलोचक भी होते हैं। यदि लक्ष्य सम्यक् हो तो आलोचकों की वजह से लक्ष्य से नहीं भटकना, आलोचकों को प्रशंसा के रूप में स्वीकार करें, आलोचकों को भी पॉजिटिव रूप में लें। यदि ईर्ष्यावश कोई आलोचना कर रहा हो तो समझें वे वह स्थान प्राप्त करना चाहते हैं जिस पर आप हैं। वे वह स्थान प्राप्त नहीं कर सके इसीलिए ऐसा कर रहे हैं।

उस पेड़ पर सबसे ज्यादा पत्थर फेंके जाते हैं जिस पर सर्वाधिक मीठे फल लगे हों।

बचपन में एक कहानी आप लोगों ने सुनी होगी। एक व्यक्ति, एक बच्चा और उसके गधे की। जिसमें हर स्थिति में लोग उसकी

निंदा ही करते हैं। गधे पर स्वयं बैठता है तब भी, बेटे को बैठाता है तब भी, दोनों बैठते हैं तब भी और उसको खाली चलाते हैं तब भी। तो लोगों का काम तो कहने का है। यह सदैव स्मरण रखें कि जिस व्यक्ति की निंदा की जा रही है उसकी छवि खराब हो या न हो, जो निरंतर सबकी निंदा करता है उसकी छवि अवश्य खराब हो जाती है। कहा है ''तुमने निंदायुक्त वचनों को उत्तम मानकर जो यहाँ कहा है, उससे कोई कार्य तो सिद्ध हुआ नहीं, केवल तुम्हारे स्वरूप का स्पष्टीकरण हो गया है।'' चाणक्य ने भी कहा है ''यदि आप एक ही कर्म से सारे जगत् को अपने वश में करना चाहते हैं, तो दूसरों की निंदा रूपी धान्य भरे खेत में विचर रही अपनी गौ रूपी वाणी को रोक लीजिए।'' हो सकता है परनिंदा से तात्कालिक संतुष्टि मिल जाए, परंतु परनिंदा में रत व्यक्ति न तो खुद का भला कर पाता है, न दूसरे का। महानुभाव ! इन सबसे ऊपर होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना है। सफलता कोई मंजिल नहीं है अपितु वह तो एक सफर है।

गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यों रहूँ दर-दर खड़ा,
जब आज मेरे सामने
है 'रास्ता' इतना पड़ा,
जब तक न मंजिल पा सकूँ
तब तक मुझे न विराम है
चलना हमारा काम है।
कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया
कुछ बोझ अपना बँट गया,
अच्छा हुआ तुम मिल गए
कुछ रास्ता ही कट गया,
क्या राह में परिचय कहूँ

राही हमारा नाम है
चलना हमारा काम है।
जीवन अपूर्ण लिए हुए
पाता कभी खोता कभी,
आशा निराशा से घिरा
हँसता कभी रोता कभी,
गति मति न हो अवरुद्ध
इसका ध्यान आठों याम है
चलना हमारा काम है।
इस विशद विश्व - प्रहार में
किसको नहीं बहना पड़ा,
सुख दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा,
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ
मुझ पर विधाता वाम है
चलना हमारा काम है।
मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा,
प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा,
फिर निराशा क्यों मुझे?
जीवन इसी का नाम है
चलना हमारा काम है।
साथ में चलते रहे
कुछ बीच ही से फिर गए,
गति न जीवन की रुकी

जो गिर गए सो गिर गए
जो रहे हर दम
उसी की सफलता अभिराम है
चलना हमारा काम है।

सफलता पाने के लिए निरंतर उत्साह और उमंग के साथ चलना होगा, आगे बढ़ना होगा। चलना है यह तो समझ में आया पर कहाँ चलना है? तो सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करना है। देखना है हमारा aim क्या है? ध्येय क्या है? किसी बालक ने इण्टर पास किया। पहले कहता था इंटर पास हो जाए बस, अब कह रहा है अरे ! इससे क्या होगा, मैं तो व्यापार करूँगा, फिर सोचता है नहीं-नहीं M.C.A. कर लूँ software engineer बनूँगा, फिर सोचता है अरे क्या रखा है M.C.A. में, M.B.A. करूँगा Market में पहचान बनाऊँगा। तो पहले अच्छी तरह खूब सोच विचार कर लें कि मेरा लक्ष्य क्या है? लक्ष्य अत्यंत सुदृढ़ होना चाहिये यह पीपल के पत्ते की तरह से हवा के झोंके से कांपने न लगे यदि लक्ष्य ही कंपायमान हो जायेगा तो तुम्हारी यात्रा व्यर्थ है। तुम्हारा मन ही पीपल के पत्ते की तरह से डोल रहा है, कभी यहाँ के लिए मन बनता है, कभी वहाँ के लिए। सोच रहे हो कुछ, किसी ने कुछ कह दिया तो करने लगे कुछ और, हो रहा है कुछ, तो बताओ जो एक साथ दस लक्ष्य लेकर चलेगा, जिसका कोई एक लक्ष्य नहीं है वह कहाँ तक पहुँचेगा। पहले कह रहा था मुझे शिखर जी जाना है फिर कहने लगा गिरनार जी जाना है, फिर कहता है नहीं-नहीं बद्रीनाथ चलो। कभी किसी ओर बढ़ता है कभी किसी ओर तो कहीं भी नहीं पहुँच पाता।

एक किसान अपने खेत में कुँआ खोदना शुरू करता है। एक जगह 4 फीट तक खोद देता है देखता है पानी नहीं निकला। तो दूसरी जगह खोदता है वहाँ भी 4 फीट तक खोद देता है देखता है पानी नहीं

निकला। तो तीसरी जगह खोदता है वहाँ भी 4 फीट तक खोदने के बाद देखता है पानी नहीं निकला तो पुनः चौथी जगह में 4 फीट खोद दिया। इस प्रकार 4-4 फीट के 20 गड्ढे खोद लिये पर किसी गड्ढे में पानी नहीं निकला तब वह उदास होकर सिर पर हाथ रखकर सड़क के किनारे बैठ गया। तभी वहाँ से एक सज्जन व्यक्ति गुजर रहे थे व्यक्ति को हताश व उदास बैठे हुए देखकर उसने उसका कारण पूछा। किसान बोला मैंने अपने खेत में 4-4 फुट के 20 गड्ढे कुएँ खोद लिए हैं पर कहीं पानी नहीं निकला तब वह व्यक्ति बोला भैया तुम 4-4 फुट के 20 कुँए खोदने से अच्छा 80 फुट का एक कुँआ खोद लेते तो तुम्हारी पीढ़ियाँ भी पानी के लिए परेशान न होतीं। बिल्कुल यही कार्य तो हम कर रहे हैं मेहनत तो करते हैं पर थोड़ी सी इस दिशा में थोड़ी सी उस दिशा में। यदि एक ही दिशा में अपनी संपूर्ण मेहनत कर लेते तो अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते।

महानुभाव ! जिसका मन वश में नहीं है ऐसा व्यक्ति सम्यक् लक्ष्य का निर्धारण नहीं कर सकता, जब तक मन कंपायमान रहेगा तब तक उसका लक्ष्य भी कंपायमान रहेगा और कंपायमान लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लक्ष्य स्थिर हो उसे प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु को निशाना बनाना चाहता है वह वस्तु स्थिर नहीं है, हिलडुल रही है तो उसे वह निशाना कैसे बनायेगा? कोई अर्जुन तो है नहीं जो कि चलती हुई मछली की आँख में निशाना लगा दे। अर्जुन जैसा तो कोई विरला ही निकलेगा जो चलता जा रहा है और अपने लक्ष्य को लपक कर प्राप्त कर ले। कागताली न्याय के अनुसार कि उड़ते हुए कौए के मुख में ताल वृक्ष का फल आ जाए ये अलग बात है। किन्तु ऐसे लक्ष्य प्राप्त नहीं होते, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले उसका निर्धारण आवश्यक है। लक्ष्य ऐसा हो जो आत्मसंतुष्टि दे। जो सफलता आत्मसंतुष्टि न दे

वह खोखली होती है। सफलता और प्रसन्नता का साथ तो सूर्य और उसके प्रकाश की तरह है। सफलता का मतलब यह है कि हम जो चाहें उसे पा लें और प्रसन्नता का मतलब यह है कि हम जो पाऐं उसे चाहें। कहा भी है-

Happiness is when-what you think, what you say and what you do, are in harmony.

सफलता और असफलता के विषय में काफी शोध किया गया। जिन व्यक्तियों को हम या यह दुनिया सफल मानती है उनके व्यक्तित्व को पढ़कर, सुनकर जाना जा सकता है कि उनमें ऐसे कौन से गुण थे जिन्होंने उन्हें सफल बनाया। हर सफल व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेष बातें पाई जाती हैं बस उन्हीं बातों को अपनाकर अपने लक्ष्य की ओर गतिमान होना है। जो व्यक्ति केवल सफलता के पीछे ही न भागकर अपने जीवन को अच्छे ढंग से जीता है वही वास्तव में सफल है।

सदा मुस्कराना और सबको प्यार करना
गुणी जनों का सम्मान करना
बच्चों के दिल में रहना
सच्चे आलोचकों से स्वीकृति पाना
झूठे दोस्तों की दगाबाजी को सहना
खूबसूरती को सराहना
दूसरों में खूबियाँ तलाशना
किसी उम्मीद के बिना
दूसरों के लिए खुद को अर्पित करना
उत्साह के साथ हर कार्य करना
इस बात का अहसास कि
आपकी जिंदगी ने किसी एक व्यक्ति का

जीवन आसान बनाया
यही सच्ची सफलता है।

–अज्ञात

सच्चा सफल व्यक्ति तो वही है जो कि कुछ भी बनने या होने से पहले एक इच्छा इंसान बने।

सर्वप्रथम अपने अंदर गुणों का विकास करें तभी लक्ष्य का निर्धारण सम्यक् रूप से कर सकेंगे, क्योंकि लक्ष्य का निर्धारण तो आवश्यक ही है। जब तक मंजिल का निर्धारण ही नहीं होगा तब मार्ग का चयन कैसे करोगे। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले निर्धारण आवश्यक है। जैसे-किसी व्यक्ति को महल बनाना है तो महल बनाने के लिए सबसे पहले क्या चाहिए? ''जमीन''। जमीन का होना अनिवार्य है।

भूमि बिना भूमिका नहीं बनती। भूमि आते ही भूमिका बनना शुरू होती है। भूमि होगी तो चाहे महल बनाओ या मंदिर। भूमि है तो अब नक्शा बनाओ। नक्शा तैयार कर लिया तो अब सबसे पहले खोदना पड़ता है। यदि उस भूमि पर पूर्व में कुछ बना हुआ है तो उसे मिटाना पड़ता है। बिना मिटाये बनाना संभव नहीं है। जो व्यक्ति स्वयं मिटने के लिए तैयार हो जाता है, वही जीवन में बन पाता है। जो नदी स्वयं के अस्तित्व को मिटाती है वही सागर बन पाती है। यदि पूर्वाग्रह को नहीं छोड़ा, पुरानी-पुरानी बातों को नहीं छोड़ा तो आगे बढ़ने की इच्छा होने पर भी बढ़ नहीं पाएगा। क्योंकि पिछले पैर को उठाये बिना कदम आगे की ओर नहीं बढ़ा सकते।

इसी प्रकार भूमि पर नवीन निर्माण से पूर्व जो कुछ भी वहाँ बना है उसको पहले ध्वस्त करना पड़ेगा और भूमि समतल करनी पड़ेगी। कोई आकर तुम्हें पागल कहेगा, रोकेगा, टोकेगा। वह कहेगा मकान

बना रहे हो तो इन दीवारों को क्यों तोड़ रहे हो। क्या अपने मकान में दीवारें नहीं बनवाओगे। तब कहोगे, ''दीवार तो बनवाऊँगा, नयी और मजबूत बनवाऊँगा'' किन्तु जो दूसरों की बातों में आ जाते हैं कि भैया पुरानी दीवारें तो ऐसी हैं हीं, क्यों खर्चा करता है इन पर ही छत डाल दे, इन पर ही महल बना ले। तो वह व्यक्ति जितनी बार मकान बनवायेगा, उतनी बार धराशाही होता चला जाएगा। इसीलिए सबसे पहले मजबूत हृदय करके मिटाने और मिटने के लिए तैयार हो जाओ।

मिट्टी जब पिटती है तो गागर बनती है और बूंद जब मिटती है तो सागर बन जाती है। और मानव जब सम्यक् रूप से मिटता है तो उसकी आत्मा, परमात्मा बन जाती है। तो मिटाकर भूमि समतल कर ली अब क्या महल की दीवारें खड़ी कर दें नहीं जितना ऊँचा महल बनाने का भाव है उसके अनुसार गहरी नींव खोदने के लिए तैयार हो जाओ। अरे! कोई कहता है इतनी गहरी और मोटी नींव खोदते-खोदते तो मेरा 20 प्रतिशत जीवन चला जाएगा। और 25 प्रतिशत जीवन नींव भरने में।'' कोई चिंता मत करो, यदि 45 प्रतिशत जीवन निकलता है तो निकलने दो इसके उपरांत बहुत सुंदर महल बनाया जा सकता है। मेहनत तो नीचे होती है, नीचे की मेहनत दिखाई नहीं देती। ऊपर कंगूरे या ऊपरी परत दिखाई देती है किन्तु नींव के पत्थर दिखाई नहीं देते। परंतु यह भी सत्य है कि नींव के बिना कंगूरे कभी लटकते दिखाई नहीं देते, यदि नींव नहीं भरी है तो वे धराशाही हो जाऐंगे। यदि ऊपर उठते हैं तो इसका आशय यह है कि वे अपने पैरों को ध रती के अंदर जमा करके खड़े हैं।

महानुभाव ! नींव मजबूत होगी तब महल बनता चला जायेगा। नींव में मजबूत-मजबूत पत्थरों को दबाना पड़ेगा, बालू या मिट्टी से काम नहीं चलेगा। आप कहोगे अरे ! नींव में पत्थर कौन देखने आयेगा? भैया ये दिखाने के लिए नहीं होते इनको दिखाना नहीं

पड़ता, छिपाना पड़ता है। उनका फल ऊपर दिखता है, वृक्षों की जड़ों को उखाड़कर नहीं देखना पड़ता उनके फल ऊपर दिखाई दे जाते हैं जिससे वृक्ष की गहराई का अंदाजा लगा लिया जाता है, वृक्ष की ऊँचाई से उसकी जड़ों की गहराई व मजबूती का अंदाजा लगा लिया जाता है साधक भी अपनी अच्छाईयों को छिपाता है दिखाता नहीं है। दिखाता जाये तो उसके पास कुछ बचेगा नहीं। जितनी ज्यादा गुप्त साधना करेगा उतना ही ऊपर जायेगा। जो वृक्ष बहुत ऊँचा हो किंतु जड़ें उसकी बिल्कुल न हों लाकर बस जमीन से चिपका दिया हो तो वह हवा के झोंके से धराशाही हो जायेगा।

महानुभाव ! महल की नींव खोदने के पश्चात् मजबूत बड़े-बड़े पिलर खड़े करना है। नीचे हाथी के पंजे जैसा मजबूत पिलर ऊपर तक चला जाए तब मजबूत दीवार बनवाऐं पुनः सब मजबूत होने के पश्चात् छत न डाली जाए तो महल किस काम का? तो छत डलवा दी। अब वह महल किस काम का जिसमें एक भी खिड़की दरवाजा नहीं। डिब्बा बंद हो गया भूल से ऊपर छत में कुछ जगह रह गयी उसमें से टपक गए तो वह कब्र बन गयी महल कहाँ बना ? तो महल में ये सब चीजें आवश्यक हैं, दूसरे की सलाह भी आवश्यक है और काम करने वालों को प्रोत्साहन देना भी आवश्यक है। शिल्पकार केवल वेतनभोगी ही नहीं होता उसकी कला का विकास, शिल्प का विकास तभी होगा जब समय-समय पर प्रोत्साहन मिलेगा, अकेला पारिश्रमिक मिलता रहेगा तो उसका पेट तो भरता रहेगा किंतु कला में निखार नहीं आ पायेगा ये सब बातें आवश्यक हैं, एक कुशल व्यक्ति इन सब बातों को सोचता है तब महल का काम प्रारंभ करता है, यदि ये सब सामर्थ्य नहीं है तो महल का नक्शा बनाकर के वर्षों तक रखा रहेगा बना नही पायेगा। अब जीवन के महल को भी बनाना है। जीवन का महल यदि सफलता को प्राप्त करता है तो सबसे पहले आवश्यक

है-भूमि। भूमि का आशय है लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य निर्धारण करना सबसे पहले आवश्यक है। इसके उपरांत काम प्रारंभ करने का सबसे पहला कार्य है ''संकल्प शक्ति''

१. संकल्प शक्ति:- महल बनाने में सबसे पहले आवश्यकता थी नींव भरने की और जीवन रूपी महल बनाने के लिए आवश्यकता है संकल्प शक्ति की। मैं इस कार्य को प्राप्त करके ही रहूँगा, इसके लिए मुझे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े मैं सब कुछ चुकाने के लिए तैयार हूँ किंतु इस सफलता को प्राप्त करके ही रहूँगा यदि व्यक्ति संकल्प ले ले तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है-

The difference between the impossible and the possible lies in a man's determination.

जिस प्रकार एक नदी सागर से मिलने की चाह को लेकर आगे बढ़ती है। कई प्रकार के मंजर, कई प्रकार की बाधाओं, टेढी-मेढ़ी राहों, चट्टानों और पत्थरों के टकराव को सहन करती हुई आगे बढ़ती हुई अंत में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है। तब किसी कवि ने कुछ पंक्तियाँ कहीं-

शत-शत बाधा बंधन तोड़,
निकल चला मैं पत्थर फोड़।
पारावार मिलन की चाह,
मुझे मार्ग की क्या परवाह।
जाता हूँ मैं भृकुटी मरोड़
निलक चला मैं पत्थर फोड़॥

महानुभाव ! बाधाऐं तो इस नदी की राह में भी खूब आयीं परन्तु वह रुकी नहीं बल्कि आगे बढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। ''इतिहास बताता है कि बड़े-बड़े विजेताओं को भी जीत से पहले

हताश कर देने वाली बाधाओं का सामना करना पड़ा। उन्हें जीत इसलिए मिली कि वे अपनी असफलताओं से मायूस नहीं हुए।'' जो व्यक्ति जितना ज्यादा संघर्ष करता है जितनी ज्यादा बाधाओं का सामना करता है वह उतना ही आगे बढ़ता जाता है। जिंदगी में कोई भी कीमती चीज बिना संघर्ष के नहीं मिलती। जीवन में कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। थोड़े संघर्ष का सामना जरूर करना पड़ सकता है। Impossible कुछ भी नहीं है क्योंकि **Impossible says "I am possible"** जब सब कुछ प्राप्त करना संभव है तब आवश्यकता है सम्यक् पुरुषार्थ की।

संघर्षों से घबराने की आवश्यकता नहीं है ''संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है।'' वह हर व्यक्ति जो चोटी पर खड़ा है वह पहाड़ की टेड़ी-मेड़ी राहों और चट्टानों पर गुजरने के बाद ही वहाँ पहुँचा है। वह व्यक्ति जो दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ा है उसने अपनी मंजिल को प्राप्त किया है। जिसका लक्ष्य जितना सुदृढ़ होता है वह नि:संदेह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है जिसके जीवन में एक संकल्प होता है वह उसे प्राप्त कर लेता है सौ संकल्प वाला एक को भी प्राप्त नहीं कर सकता।

एक साधै सब सधैं, सब साधैं सब जायै।
जो तू सेवे मूल को, फूले फलै अघाय॥

एक संकल्प बड़ा सुदृढ़ होता है अनेक संकल्प शिथिल होते हैं। संकल्प एक हो सुदृढ़ हो जब वह पूरा हो जाये तो दूसरा भी पूरा किया जा सकता है। एक साथ 10 काम करोगे तो न कर पाओगे। 'बहु संकल्पी शिथिल दृष्टि' जो बहुत संकल्प वाला होता है वह शिथिल दृष्टि वाला होता है, शिथिल व्यक्तित्व वाला होता है। वह जीवन में उच्च सफलता को प्राप्त नहीं कर पाता। एक संकल्प को लेकर आगे बढ़ने वाला व्यक्ति निश्चय ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

संकल्प के विषय में आ. श्री गुणभद्र स्वामी आत्मानुशासन नामक ग्रंथ में कहते हैं-'संकल्पं कल्पवृक्षस्यात्'

एक बार कपिलवस्तु के महाराज शुद्धोधन के पुत्र सिद्धार्थ वैराग्य को प्राप्त हो गए। उनका जुनून था ''वैराग्य''। एक समय नगर भ्रमण के लिए निकले तो एक रोगी, वृद्ध, मृतक को देखकर उनके मन में वैराग्य हुआ तब यथाजात दिगंबर अवस्था को स्वीकार किया और तपस्या करने लगे। महीनों तक चावल का एक दाना आहार में लिया, केवल पानी से रहे, भूमि पर शयन किया। दो माह, तीन माह, चार माह में केशलोंच किया, दुर्द्धर तपस्या की, आतापन योग आदि किये किन्तु उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति न हो सकी तब वे अपनी साधना से झुंझला गये। वह साधना सम्यक् साधना नहीं कहलाती जिसमें झुंझलाहट आ जाये। सम्यक् साधना वही कहलाती है जिसमें शांति हो। तो वह बुद्ध सिद्धार्थ झुंझला गये कि इतनी साधना के बाद भी मुझे केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई, ऐसी साधना को धिक्कार है, मैं नहीं करता हूँ ऐसी साधना को। मैं तो जाकर के राज्य करूँगा और लौट गये।

यह कथन स्वयं उनकी जातक कथा तथा बौद्ध ग्रंथों में है। लौटते समय उनका कंठ प्यास से बहुत सूख रहा था, प्राण मानो कंठ में आ गए थे, कुछ ही आगे गौतम बुद्ध को एक झील दिखाई दी और वे उसमें पानी पीने के लिए चले। झील में पहुँचे पानी पीना प्रारंभ कर ही रहे थे कि उनकी दृष्टि एक जानवर पर पड़ी वह थी गिलहरी। इतनी सुंदर गिलहरी आज से पहले कभी नहीं देखी वह उसे देखकर बड़े खुश हुए और उससे ज्यादा उसके कृत्य को देखकर, वह बार-बार आकर अपनी पूँछ को झाड़ती, पुनः झील में जाती और बाहर आकर अपनी पूँछ झाड़ती।

ऐसा कृत्य देखकर बुद्ध ने पूछा-''गिलहरी ! तुम ये क्या कर रही हो?'' वह बोली ''मैं वो बुद्ध नहीं हूँ जो कार्य को बीच में छोड़ कर ही बैठ जाऊँ मैं तो वह गिलहरी हूँ जो जब तक कार्य पूर्ण नहीं होगा तब तक नहीं बैठती। इस दरिया ने मेरे बच्चों को निगल लिया है मैं जब तक इस दरिया को सुखा नहीं दूँगी तब तक नहीं बैठूँगी।'' बुद्ध ने कहा ''ये इतना बड़ा दरिया और तुम इतनी छोटी, यह कार्य पूरे जीवन काल में भी नहीं कर पाओगी।'' वह बोली-''तुम तो मुझे सलाह ही मत दो जो स्वयं अपने लक्ष्य को बीच में छोड़कर आ गये, चाहे झील सूखे या न सूखे मैं अपने संकल्प से पीछे नहीं हटूँगी।'' गिलहरी की यह संकल्प शक्ति देख बुद्ध पुनः अपने संकल्प के लिए जागरूक हो गये और पुनः वहीं से लौट गये अपने जागरूक संकल्प के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए।

महानुभाव, क्या आपने कभी यह सोचा कि ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग तो अहर्निश अपनी सफलता की कहानियाँ लिखते चले जाते हैं जबकि कुछ लोग तैयारी ही करते रह जाते हैं। क्योंकि वे लोग दृढ़ संकल्प के साथ एक के बाद दूसरी रुकावटों को पार करते चले जाते हैं जबकि दूसरे लोग ऐसा नहीं कर पाते। कुछ लोग तो इसलिए ही आगे नहीं बढ़ते कि कहीं वे हार न जाएँ, कहीं वे अपनी मंजिल तक पहुँच न पायें। किंतु

The only thing worse than starting something and failing.....is not starting something.

किसी चीज को शुरू करके उसमें सफलता न पाना बुरा नहीं है किंतु शुरूआत ही न करना यह बुरा है। जिस व्यक्ति ने शुरूआत ही नहीं की वह क्या आगे बढ़ेगा? संघर्षों का सामने करने से क्या डरना? बाधाओं का सामना डरकर नहीं डटकर करो। एक बार अध्यापक बच्चों को पढ़ा रहे थे caterpillar, तितली में कैसे बदलती है।

समझाने के लिए उन्होंने बच्चों को दिखाया और बताया देखो कुछ ही समय में तितलियाँ अपने खोल से बाहर निकलने की कोशिश करेंगी और हाँ उस समय कोई भी उन्हें छेड़ना मत। इतना कहकर अध्यापक कक्षा से बाहर चले गए। सभी विद्यार्थी देख रहे थे कि कितनी मुश्किल से तितलियाँ खोल तोड़कर बाहर निकल पा रही हैं। तभी एक विद्यार्थी ने करुणावश एक तितली का खोल तोड़ दिया तब तितली बिना मेहनत करे बाहर तो निकल आयी पर कुछ ही समय में मर गई। अध्यापक लौटकर आए तब बच्चों ने उन्हें सब बता दिया। सुनकर उन्होंने समझाया कि यह खोल से निकलने के लिए किया गया संघर्ष ही उनके पंखों को शक्ति देता है। तितली की मदद करने से वह संघर्ष नहीं कर पायी और अपने प्राण त्याग दिए।

महानुभाव, संघर्ष की अग्नि व्यक्ति को मजबूत और शक्तिशाली बनाती है। एक कहावत है, ''शांत समुद्र में नाविक कुशल नहीं बन पाते।'' सोना भी 16 ताप तपकर ही निखरता है। हीरे में 52 कट दिये जाते हैं। संघर्षों की ताप में तपा व्यक्ति ही स्वर्ण के समान निखर पाता है। जितने भी अरहंत, संत, भगवंत हुए उन सभी ने अपने जीवन में परीषह, उपसर्गादि संघर्षों का सामना किया। आप भजन की पंक्तियाँ पढ़ते हैं-

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे।
मखमल पर सोने वाले, भूमि पर पड़ते देखे॥
सरसों का दाना जिनके बिस्तर पे चुभता था।
काया की सुध नाही, गीदड़ तन भखते देखे॥

ऐसे सुकुमाल स्वामी जिनके दीपक का प्रकाश आँखों में लगा तो आँखों से पानी बह गया। आज भी यदि कोई बहुत sensitive होता है तो आप लोग क्या कहते हैं ये तो सुकुमार है ऐसे सुकुमार जब अपने लक्ष्य की ओर बढ़े, दिगंबरी दीक्षा स्वीकार कर तपस्या में लीन

हुए तब सियालनी उनका भक्षण करने लगी तब भी वे डिगे नहीं और सर्वार्थसिद्धि में अहमिंद्र हुए, अगले भव से मोक्ष प्राप्त करेंगे। चारित्र चक्रवर्ती आ. श्री शांतिसागर जी महाराज जिन्होंने अनेक प्रकार से संघर्षों का सामना कर मृत प्राय: मुनि परंपरा को पुनर्जीवित कर दिया। तो संघर्षों से डरना नहीं बस एक शुरूआत करनी है सफलता के लिए-

You don't have to be great to start but you have to start to be great.

शुरूआत तो कोई भी कर सकता है। शुरूआत करने के लिए महान नहीं बनना पड़ता बल्कि महान बनने के लिए शुरूआत करनी पड़ती है। कभी न कभी, कहीं न कहीं से तो शुरूआत करनी ही पड़ेगी तो आज और अभी से क्यों नहीं? वो भी एक तीव्र इच्छाशक्ति के साथ। जब तक पाने की तीव्र लालसा ही नहीं होगी तो प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं करोगे। आप कहेंगे महाराज जी इच्छा तो बहुत है पर प्राप्त नहीं होती है।

तो महानुभाव सही बात तो यह है कि अभी इतनी तीव्र पिपासा, लालसा उसके प्रति नहीं हुई। सफल होने की प्रेरणा किसी मकसद को हासिल करने की गहरी इच्छा से जन्म लेती है। नेपोलियन हिल ने लिखा है-''**इंसान का दिमाग जिन चीजों को सोच सकता है या जिन चीजों पर यकीन कर सकता है, उन्हें हासिल भी कर सकता है।**'' किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने की शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं बल्कि तीव्र इच्छा से प्राप्त होती है।

Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will.

एक बार एक सेठजी नगर के प्रसिद्ध महात्मा जी के पास पहुँचे और बोले ''महात्मा जी ! मैं शांति प्राप्त करना चाहता हूँ। मैंने हर

कोशिश की, इधर-उधर घूमा पर शांति नहीं मिली। आपका बहुत नाम सुना है इसलिए आपके पास आया हूँ।'' महात्मा जी ने उसकी बातों को सुना और कहा कल प्रातः हमारे साथ नदी की ओर चलना। अगले दिन वह सेठ, महात्मा जी के साथ नदी किनारे पहुँचा। महात्मा जी नदी में थोड़ा अंदर की ओर चले गये और वहाँ पहुँचकर सेठ जी को बुलाने लगे।

सेठ जी बोले ''महात्मा जी, मुझे पानी से डर लगता है।'' महात्मा जी बोले कोई बात नहीं बस थोड़ा ही आगे आओ। वह सेठ धीरे-धीरे महात्मा जी के पास पहुँच गये। महात्मा जी ने सेठ जी से झुककर प्रणाम करने को कहा। सेठ जी जैसे ही झुके महात्मा जी ने उसका सिर पानी में डुबो दिया। सेठ जी बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगे किन्तु फिर भी महात्मा जी ने उसका सिर पानी में डुबोए रखा। जब सेठ जी और ज्यादा छटपटाए तब महात्मा जी ने उसका सिर छोड़ दिया।

तब सेठ जी ने गहरी सांस ली बोले मैं तो आपको महात्मा समझता था पर आप तो मेरे प्राण ही लेने लगे एक छोटा सा प्रश्न क्या पूछ लिया। महात्मा जी ने उनसे पूछा अच्छा ये बताओ जब तुम्हारा सिर पानी के अंदर था तब तुम क्या चाह रहे थे? सेठ जी बोले कि कब आप मेरा सिर छोड़ो और मैं बाहर निकल सकूँ। महात्मा जी बोले क्या तुमने धन-दौलत या व्यापार में लाभ या पुत्र आदि नहीं चाहा। सेठ जी बोले चाहना तो दूर मेरे तो मन में भी नहीं आया। महात्मा जी बोले बस ! जब ऐसी ही तीव्र इच्छा सुख-शांति प्राप्त करने की होगी तब वह भी प्राप्त कर लोगे।

महानुभाव ! सफलता का यही रहस्य है। जब तुम्हें सफलता हासिल करने की वैसी ही तीव्र इच्छा होगी तब तुम्हें सफलता मिल जाएगी। दृढ़ संकल्प के साथ, तीव्र इच्छा को साथ लेकर संघर्षों की

अग्नि में तपोगे तो स्वर्ण सम निखर जाओगे, दमक जाओगे। जो स्वर्ण अग्नि की तपन से डरता है वह स्वर्ण निखर नहीं पाता, शुद्ध नहीं हो पाता इसी प्रकार जो व्यक्ति संघर्ष की अग्नि से डरता है वह ऊँचाईयों पर नहीं पहुँच पाता। आवश्यकता है सम्यक् लक्ष्य की ओर प्रथम कदम बढ़ाने की। लक्ष्य प्राप्त कर पायें या ना कर पायें यह तो बाद की बात है किंतु पहले चलना तो शुरू करें। चलोगे तो मार्ग में ठोकर भी खाओगे किंतु इनसे भी कुछ सीखना है तभी रास्ते के रोड़ों को कामयाबी की सीढ़ी बना पाओगे। मार्ग में पत्थर तो सभी को मिलते हैं किन्तु जो उनसे टकराकर गिर जाते हैं और रुक जाते हैं वे असफल कहलाते हैं तथा जो उन पत्थरों को राह की सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ जाते हैं, दुनिया उसे सफल मानती है। आगे बढ़ते जाना सफलता है भले ही वह मंजिल तक पहुँचा है या नहीं।

We shouldnot judge the people by their peak of excellence but by the distance they have travelled from the point where they started.

सफलता का माप व्यक्ति के ओहदे से नहीं किया जाता और ना ही उसकी उपलब्धियों से। सफलता का आकलन तो इससे किया जाता है कि हम कितनी बार गिरकर उठे हैं।

महानुभाव ! एक बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति जिसका नाम आप सभी लोगों ने सुना होगा। जिसने 21 वर्ष की अल्पायु में व्यापार किया परंतु नाकामयाबी मिली। पुनः 1 वर्ष बाद चुनाव लड़े तो उसमें भी नाकामयाबी पर तब भी हार नहीं मानी 24 वर्ष की उम्र में फिर से व्यापार शुरू किया, उसमें भी नाकामयाबी मिली। पुनः 26 वर्ष की उम्र में जीवन के सुख-दुःख में सहभागी उसकी पत्नी का देहांत हो गया। इतने संघर्षों और असफलताओं के बाद पुनः अपने आप को तैयार किया और 34 वर्ष की उम्र में कांग्रेस का चुनाव लड़ा जिसमें

वह हार गया। 45 वर्ष की आयु में सीनेट का चुनाव लड़ा परंतु उसमें भी नाकामयाबी ही हाथ आई। 47 वर्ष की आयु में उपराष्ट्रपति बनने में असफल रहा 49 वर्ष की आयु में सीनेट में एक और चुनाव लड़ा जिसमें असफल रहा। जिस व्यक्ति के विषय में आप सुन रहे हैं वह और कोई नहीं है, वह व्यक्ति है अब्राहम लिंकन जो 52 वर्ष की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया।

महानुभाव ! वास्तव में यह व्यक्ति सफल है। सफलता की कहानियों के साथ असफलताओं की कहानियाँ भी जुड़ी हैं बस जो लोग वहाँ से जोश के साथ फिर आगे बढ़ते हैं तो वे सफल हो जाते हैं। प्रत्येक असफलता से सीखते हुए आगे बढ़ना है। मार्ग के पत्थरों को सीढ़ी बनाते हुए आगे की ओर बढ़ना है। इसके पश्चात् अगला कार्य है अटल विश्वास।

२. अटल विश्वास :- व्यक्ति को अपने लक्ष्य पर अडिग विश्वास होना चाहिये, लक्ष्य अटल होना चाहिये। चाहे तीन लोक कंपायमान हो जायें, किंतु अपने लक्ष्य से वह डिगे नहीं। 23वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ जब ध्यान में तल्लीन थे तब संवर देव ने उन पर ओले, शोले, पत्थर, पानी बरसाकर उपसर्ग किया।

तुम पर निर्जन वन में बरसे, ओले शोले पत्थर पानी।
पर त्याग तपस्या के आगे, चल सकी न शठ की मनमानी॥

परंतु ऐसे में भी पार्श्वनाथ स्वामी ध्यान से डिगे नहीं तब उन्होंने अपने लक्ष्य केवलज्ञान व क्रमशः मोक्ष को प्राप्त किया। शास्त्रों में ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं जहाँ कितने ही महापुरुषादि अनेक उपसर्ग व कठिनाईयाँ आने पर भी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। देशभूषण-कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग किए जाने पर भी वे अडिग रहे और लक्ष्य को प्राप्त किया। गजकुमार मुनि के सिर पर पांसुल श्रेष्ठी

के द्वारा जलती हुई सिगड़ी रखे जाने पर भी वे तप में तल्लीन रहे। पांडव, सुकौशल मुनि, गुरूदत्तादि मुनि, बाहुबली स्वामी, संजयंत मुनि, महावीर स्वामी, श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी, रामचंद्र जी, श्री सुदर्शन, सकलभूषण, श्री अभिनंदनादि 500 मुनि, श्री अंकपनाचार्यादि 700 मुनि, हिरण्य वर्मा, मुनि वारिषेण आदि सभी प्रतिकूलताओं उपसर्गों में अडिग रहे और लक्ष्य को प्राप्त किया। रावण जब बहुरूपिणी विद्या सिद्ध कर रहा था तब उसको डिगाने के लिए उसे विद्याबल से सभी परिवारी जन मृत दिखाए किंतु तब भी वह डिगा नहीं और विद्या सिद्ध की।

महानुभाव ! जो डिग गये तो उनकी मंजिल भी डिग गयी। जो नहीं डिगते तो मंजिल स्वयं खिसक कर उनके पास आ जाती है। जो स्वयं नहीं डिगा मंजिल उसके लिए स्वयं झुक जाती है। अटल विश्वास हो अपने लक्ष्य के प्रति न केवल लक्ष्य के प्रति बल्कि अपने प्रति अपने सहयोगियों के प्रति और अपने raw material के प्रति भी। स्वयं के प्रति विश्वास व्यक्ति को जीने की कला देता है।

खुशी एक ऐसा अहसास है जिसकी हर किसी को तलाश है, गम एक ऐसा अनुभव है जो हर किसी के पास है पर जिंदगी तो वही जीता है जिसे खुद पर विश्वास है। तो स्वयं पर विश्वास करें। सहयोगी और raw material भी ऐसा हो जिस पर आप पूर्ण विश्वास कर सकें। जैसे स्वर्ण पाषाण है इसमें से ही स्वर्ण निकलेगा। उसका मन कंपायमान न हो कहीं ऐसा न हो कि इस मिट्टी से घड़ा बने ही नहीं, ये आटा रोटी ही न बन पाये। पता नहीं सफलता मिलेगी या नहीं। कहीं ऐसा न हो असफल हो जाएँ, ऐसा संदेह नहीं करना है। सूर्य पूर्व दिशा से ही उदित होता है और पश्चिम दिशा में अस्त, ऐसा अटल विश्वास ही अपने लक्ष्य के प्रति होना चाहिए। जितना विश्वास इसमें है कि बिना श्वाँस के व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता,

जब तक प्राण शरीर में है तब तक वह जीवंत कहलाता है, प्राण निकल जाने पर मृतक। जितना विश्वास इसमें है कि जो व्यक्ति जन्मा है वह नियम से मरेगा। इससे भी ज्यादा विश्वास की आवश्यकता है अपने लक्ष्य के प्रति, अपने पुरुषार्थ के प्रति। दृढ़ पुरुषार्थ से ही सफलता प्राप्त होती है। जो पुरुषार्थ में ऊर्ध्वगामी होता है, मुखर होता है, उसमें आनंद, उमंग व उल्लास आता है तो भाग्य भी उसका साथ देता है। केवल भाग्य के भरोसे बैठकर रोने से सफलता नहीं मिलती पुरुषार्थ नहीं किया तो भाग्य भरोसे बैठकर रोते रहोगे और कर्मों का बोझ ढोते रहोगे।

You can't cross the sea merely by standing and staring at the water.

सागर के किनारे खड़े रहने या देखते रहने से वह पार नहीं किया जा सकता उसके लिए तो तैरना ही पड़ेगा। जहाज से या अन्य साधनों से भी जाऐंगे तो उसमें बैठना ही पड़ेगा। पुरुषार्थ तो स्वयं को ही करना पड़ेगा।

न दैवमिति संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः।
अनुद्योगे तु कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमिच्छति॥

जो भाग्य में होगा वह मिलेगा, ऐसा विचार कर अपना उद्योग नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि उद्योग के अभाव में तिलों से तेल कौन प्राप्त करना चाहता है? पुरुषार्थ के माध्यम से सफलता मिलेगी और पुरुषार्थियों का ही भाग्य साथ देता है।

उद्यमः साहसं धैर्यं बलं बुद्धिपराक्रमौ।
षडेते यस्य विद्यंते तस्य देवोऽपि किंकरः॥

उद्यम, साहस, धैर्य, आत्मबल, बुद्धि और शारीरिक बल ये छह जिसके पास हैं देव भी उसका आज्ञाकारी होता है। जो पुरुषार्थी नहीं

होते तो उनका भाग्य क्या करेगा, क्या करेगा सूर्य, क्या करेंगे कुण्डली के ग्रह, क्या करेंगी हाथों की रेखाएँ जब व्यक्ति स्वयं कुछ करने के लिए तैयार नहीं है। लोग कहते हैं व्यक्ति के भाग्य में जो लिखा है, व्यक्ति के हाथों की लकीरों में जो लिखा है वही मिलेगा, उससे ज्यादा नहीं। तो जिनके हाथ नहीं है फिर तो उन्हें कुछ मिलेगा ही नहीं। लकीरें कहाँ से आईं जब हाथ ही नहीं हैं किन्तु

''कौन कहता है हाथों की लकीरें तकदीर बनाती हैं।
अरे ! तकदीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नहीं है।

एक व्यक्ति जिसका नाम शायद आप लोगों ने सुना हो निक्म्यूजिकिक। जिसके दोनों हाथ नहीं, पैर नहीं (पंजे है) आप सुनकर आश्चर्य करेंगे कि क्या सफलता उसने अपने जीवन में प्राप्त की। उसने अपने जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी। इसका इंटरव्यू लेने मीडिया वाले पहुँचे तो दंग रह गये। वह व्यक्ति जिसके हाथ, पैर नहीं तैर लेता है, सारे काम कर लेता है। लोग उससे सलाह लेने के लिए लंबी लाइन लगाए रहते हैं। क्या गजब का उसका साहस है। साहस का पुतला है। जिसके हाथ, पैर नहीं कल्पना करो वह ऊपर से पानी में कूद गया और तैर रहा है, गाड़ी आदि चला रहा है। उसका सबसे बड़ा वाक्य ये है कि ''मैंने सफलता कभी भाग्य में नहीं देखी, मैं सफलता अपने पुरुषार्थ में मानता हूँ।'' संसार का कोई भी व्यक्ति, कोई भी कार्य कर सकता है किंतु शर्त ये है कि उसके मन में इतना साहस होना चाहिए, उसकी आत्मा से ये आवाज निकल कर आ जाना चाहिए कि मैं इस कार्य को कर सकता हूँ।

Before you can win, you have to believe you are worthy.

महानुभाव ! कुछ लोग हैं जिन्होंने निराशा को आशा में बदल दिया, असंभव को संभव बना दिया। एक लड़की विल्मा रुडोल्फ

जिसका जन्म टेनेसीसी के एक गरीब परिवार में हुआ था। चार वर्ष की आयु में वह गंभीर रूप से बीमार हुई। उसे डबल निमोनिया और काला बुखार हो गया था जिसकी वजह से उसे पोलियो हो गया। डॉक्टरों को दिखाया तो उन्होंने कहा कि अब यह कभी चल नहीं पायेगी और पैरों को सहारा देने के लिए ब्रैस पहना दी। रूडोल्फ की माँ ने धैर्य नहीं खोया और अपनी बेटी से बोली ''ईश्वर की दी हुई क्षमता, मेहनत और लगन से जो चाहो वह कर सकती हो'' यह सुनकर वह बोली ''माँ मैं दुनिया की सबसे तेज runner बनना चाहती हूँ।'' नौ वर्ष की आयु में डॉक्टरों के मना करने के बावजूद उसने ब्रैस उतार कर अपना पहला कदम बढ़ाया। 13 वर्ष की आयु में उसने पहली दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और सबसे पीछे रही। बहुत सी दौड़ प्रतियोगिताओं में भाग लिया और हमेशा सबसे पीछे रही। वह तब तक प्रतियोगिताओं में भाग लेती रही जब तक वह first नहीं आ गई।

15 साल की उम्र में विल्मा टेनेसी स्टेट यूनिवर्सिटी गई, जहाँ वह एड टेम्पल नाम के कोच से मिली। विल्मा ने उनके सामने अपनी इच्छा प्रकट की और बताया ''मैं दुनिया की सबसे तेज runner बनना चाहती हूँ।'' तब टेम्पल ने कहा ''तुम्हारी इस इच्छा शक्ति की वजह से तुम्हें कोई नहीं रोक सकता और साथ में मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा।'' आखिरकार वह दिन आ ही गया जब विल्मा ने ओलंपिक में हिस्सा लिया। ओलंपिक में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में मुकाबला होता है। विल्मा का मुकाबला जुत्ता हैन से था, जिसे कोई हरा नहीं पाया था।

पहली दौड़ 100 मीटर की थी जिसमें विल्मा ने हैन को हराकर गोल्ड मैडल जीता। दूसरी दौड़ 200 मीटर की थी। विल्मा को दूसरा गोल्ड मैडल मिला। तीसरी दौड़ 400 मीटर की रिले रेस थी, इसमें भी

प्रतिद्वंदी के रूप में जुत्ता हैन ही विल्मा के सामने थी। रेस के आखिरी हिस्से यानि रिले में टीम का सबसे तेज एथलीट ही दौड़ता है। विल्मा की टीम के 3 लोग रिले रेस के शुरूआती तीन हिस्से में दौड़े और आसानी से बेटन बदली। जब विल्मा के दौड़ने की बारी आई, उसके हाथ से बेटन ही छूट गई विल्मा ने देखा की दूसरी ओर जुत्ता हैन तेजी से दौड़ रही है। विल्मा ने गिरी हुई बेटन उठाई और मशीन की तरह ऐसी तेजी से दौड़ी की एक बार फिर जुत्ता को हराया और तीसरा गोल्ड मैडल जीता। यह बात इतिहास में स्वर्णांकित हो गई कि एक लकवाग्रस्त महिला 1960 के ओलंपिक में दुनिया की सबसे तेज धाविका बन गई।

संसार का कोई भी व्यक्ति, कोई भी कार्य कर सकता है शर्त ये है कि उसके मन में इतना साहस होना चाहिये, उसकी आत्मा से ये आवाज निकल कर आ जाना चाहिये कि मैं इस कार्य को कर सकता हूँ तो उसके लिए वह असंभव नहीं है, वह कार्य कर सकता है।

महानुभाव ! अपने लक्ष्य के प्रति अटल विश्वास हो। किसी ने कहा है-''यह विश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो।'' पंचतंत्र में कहा गया है कि **''आत्मविश्वासी व्यक्ति ही समुद्र के बीचोंबीच जहाज के नष्ट हो जाने पर भी तैरकर उसे पार कर लेता है।''** कुछ लोग थोड़ी सी विपत्ति या कठिनाई आते ही घबरा जाते हैं, जबकि कुछ बड़े से बड़ा संकट आने पर भी विचलित नहीं होते। विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर, शांत और अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त रहने वाले व्यक्ति के पास ऐसी कौन सी शक्ति है जो पराजय के क्षणों एवं असफलताओं की घड़ियों में भी पर्वत-पुरुषों की तरह हँसते-मुस्कराते सब सहने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं ? नि:संदेह वह है उनका आत्म विश्वास। कई लोग दूसरों की योग्यताओं अथवा गुणों को देखकर हीन-भावना से ग्रस्त हो जाते

हैं। वे सोचते हैं कि उनमें वे गुण नहीं हैं। परन्तु ऐसा नहीं है, कहा है-

कस्यापि कोऽप्यतिशयोस्ति स तेन लोके,
ख्याति प्रयाति न हि सर्वेविदस्तु सर्वे।
किं केतकी फलति किं पनसः सुपुष्पः,
किं नागवल्लयपि पुष्पफलैरूपेता॥

किसी की कोई विशेषता होती है और किसी की कोई उसी से उसकी ख्याति लोक में फैल जाती है। कोई भी सर्वज्ञ अथवा सर्वगुण संपन्न नहीं होता। क्या केवड़े पर फल लगता है? क्या कटहल पर फूल आते हैं? क्या पान की बेल पर फूल और फल लगते हैं? हर व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण होते हैं। हमें भीतर के इन गुणों को पहचानकर आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए। जिस व्यक्ति को स्वयं पर ही विश्वास न हो वह किसी और पर क्या विश्वास कर सकता है।

खुदी को कर बुलंद इतना
कि खुदा बंदे से पूछे, बता तेरी रजा क्या है?

यदि आत्मविश्वास है तो पहाड़-सी समस्याएँ राई सी हो जाएँगी लेकिन यह आपको स्वयं के भीतर तो जागृत करना पड़ेगा ही और अटल विश्वास हो भगवान पर, ईश्वर पर, प्रभु पर। जिनेंद्र प्रभु की भक्ति सर्व मनोरथों को सिद्ध करने में समर्थ है।

यस्य चित्ते जिनेन्द्राणां भक्तिः सन्तिष्ठते सदा।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि तस्य नैवात्र संशयः॥

जिसके मन में सदा जिनेन्द्रदेव की भक्ति विद्यमान रहती है उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं इसमें संशय नहीं है।

जिनेन्द्र भगवान पर की गई असीम श्रद्धा, अगाध विश्वास, निःसीम आस्था चिंतित अथवा कल्पित भावनाओं को पूर्ण करने में

समर्थ है। एक संत जिसे भगवान में गहरी श्रद्धा थी, जंगल में साधना करता था और अहर्निश भगवान की भक्ति में डूबा रहता था। वह मानता था कि प्रत्येक समय भगवान उसके साथ रहते हैं और उसका उसे अहसास भी था। उसको अपने पद चिह्नों के साथ दो पद चिह्न और दिखाई देते थे। वक्त गुजरता गया एक दिन वह संत बहुत बीमार पड़ गया। उसका बोलना-चलना-फिरना-खाना-पीना सब कठिन हो गया। मृत्यु उसे समीप दिखने लगी पर उसे उतना दुःख बीमारी का नहीं हुआ जितना दुःख उसे तब हुआ जब उसने जमीन पर दो पद चिह्नों को देखा। वह बोला भगवान् ! दुनिया तो ऐसी है ही मुसीबत में साथ नहीं देती परंतु ऐसी अवस्था में आप भी मुझे छोड़कर चले गये। जब कुछ दिन ऐसे ही बीते तब भगवान ने कहा-तुम्हें क्या हो गया है मैं तुम्हारे साथ कल भी था, आज भी हूँ। तुम बीमारी में चल नहीं पा रहे थे तो मैंने तुम्हें गोद में ले लिया इसलिए तुम्हें सिर्फ दो पद चिह्न दिख रहे हैं जो मेरे हैं। यह सुनकर उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। तब वह भक्त भक्ति में तल्लीन होकर कहता है

मैं तुम तक कैसे आ पाता, मुझको चरण मिले ही कब थे।
जो ले आये मुझे यहाँ तक, वे भी चरण तुम्हारे ही थे॥

महानुभाव ! इसके तथ्य को समझना है। भगवान की स्तुति, भक्ति, अर्चना करने से पुण्य संचित होता है जिससे मनोवांछित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। भगवान पर की गई अगाध श्रद्धा जीवन में हर सफलता को प्रदान कर सकती है। तो अपने आराध्य पर विश्वास, अपने लक्ष्य पर विश्वास व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना है। फिर विश्वास हो अपने लक्ष्य पर पुरुषार्थ पर भाग्य के भरोसे न रहें। भाग्य के भरोसे रहने पर कभी संभावना है कि 10 प्रतिशत काम बन जाये, भाग्य से सफलता कभी अचानक मिल भी जाती है। किन्तु वह सफलता वास्तव में सफलता नहीं है। पुरुषार्थ से

हासिल की गई सफलता कोई छीन नहीं सकता। अतः अडिग विश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर सदैव गतिशील रहो। चाणक्य ने कहा है-

पुरुषकार मनुवर्तते दैवं

अर्थात् भाग्य पुरुषार्थ का अनुसरण करता है।

न दैव प्रमाणानां कार्य सिद्धिः।

जो भाग्य में ही विश्वास करते हैं उनके कार्य की सिद्धि नहीं होती।

Some people want it to happen, some wish it would happen and others make it happen.

भाग्य के भरोसे मत रहो पुरुषार्थ करके मंजिल को प्राप्त करो। तीसरी बात है-निरंतर उद्यमशीलता।

३. निरंतर उद्यमशीलता-सफलता को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को निरंतर उद्यमशील रहना चाहिए। कभी मन से, कभी वचन से तो कभी तन से। किसी भी प्रकार से कोई गेप न दें क्योंकि ये तो चलती हुई गाड़ी है, पहाड़ पर चढ़ रही है यदि आप निरंतर चलते जाओगे तो चढ़ जाओगे। जब शरीर से काम कर रहे हो तब शरीर से करो, शरीर जब विराम है अर्थात् आराम कर रहा है तो मन से सोचो कि मैं कैसे क्या करूँगा, उस कार्य के प्रति तुम्हारा उपयोग निरंतर बना रहे। चाहे किसी भी प्रकार से उस कार्य में आपकी उद्यमशीलता दिखाई देना चाहिए। किसी चीज को पाने के लिए उसके प्रति सदैव उद्यमशील रहो वरना उसे पा नहीं पाओगे। कहा भी है-

If you don't go after what you want, you will never have it.

जो व्यक्ति उद्यमशील होते हैं वे मार्ग के शूलों को भी फूला बना लेते हैं, धूप को भी छाया में परिवर्तित कर देते हैं, पाप को भी पुण्य

में बदलने का साहस रखते हैं। वे विघ्नों का परिहार करते हैं, प्रमाद का वर्जन कार्य की सफलता का एक कारण है। जो व्यक्ति मार्ग के फूलों को देखकर के आनंदित हो जाता है, क्षणभर के लिए विश्राम ले लेता है उसके हाथ से सफलता फिसल जाती है। आप सभी ने तेज दौड़ने वाले किन्तु प्रमादी और धीरे चलने वाले किन्तु निरंतर उद्यमशील कछुए के विषय में तो सुना ही होगा। कछुआ अपनी निरंतर गति के कारण खरगोश से दौड़ में जीत जाता है कहा भी है-

Slow & steady wins at end.

अनियमितता में कड़ी मेहनत से असरदार है नियमित रूप से थोड़ी मेहनत। अनुशासन बद्ध तरीके से मेहनत करना। क्योंकि अनुशासन ही नियमित मेहनत करवा सकता है। अनुशासन में पला व्यक्ति हमेशा कुछ विशेष बनता है उद्देश्य प्राप्त करने में सफल होता है जबकि अनुशासनहीन कितने ही व्यक्तियों के उदाहरण हमारे सामने हैं। एक बच्चा अपने पिता के साथ पतंग उड़ा रहा था। बेटे ने पूछा ''पिताजी ये पतंग किस वजह से ऊपर उड़ रही है।'' पिता बोले ''धागे की वजह से।'' बेटा बोला ''लेकिन यह तो पतंग को नीचे खींच रहा है।'' पिता जी ने बेटे से कहा जो मैं करूँ ध्यान से देखना। उन्होंने धागा तोड़ दिया और जैसा कि होता है वह पतंग नीचे गिर गई। कुछ समझे, यही तो हमारी जिंदगी में होता है। कई बार हम जिन चीजों को सोचते हैं कि वे हमें नीचे धकेल रही हैं वे हमें ऊपर की ओर उठाती हैं। हमारा अनुशासन, हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति कभी नीचे की ओर नहीं खींचती। बल्कि जब तक इनसे जुड़े रहते हैं तब तक ऊँचाईयों के आसमान को छूते चले जाते हैं। एक क्षण का प्रमाद भी तुम्हारी पूरी सफलता को लेकर डूब सकता है, यदि एक क्षण के लिए रस्सी छोड़ दी तो बाल्टी सहित कुँए में चली जाएगी। इसीलिए प्रमाद वर्जन बहुत आवश्यक है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बंधुः यं कृत्वा नावसीदति॥

आलस्य मनुष्यों का शरीर में स्थित सबसे बड़ा शत्रु है। परिश्रम के समान कोई बंधु नहीं है, जिसे करके मनुष्य दुःखी नहीं होता है। सामान्यतः शत्रु हानिकारक होता है किंतु यदि वह शत्रु उसके अपने ही घर में बैठा हो तब तो कहना ही क्या? आलस्य मनुष्य के शरीर रूपी घर में बैठा एक ऐसा शत्रु है जिससे सर्वाधिक हानि की संभावना है इसीलिए कहा है-

धर्ममार्गाविरोधेन संकल्पोऽपि कुलोचितः।
निस्तंद्रेण विधेयोऽत्र व्यवसायः सुमेधसा॥

बुद्धिमान मनुष्य को आलस्य रहित होकर धर्ममार्ग से अविरुद्ध कुल के योग्य संकल्प भी करना चाहिए और उसकी पूर्ति के लिए व्यवसाय उद्योग भी। जो व्यक्ति परिश्रमशील है मानो उसका श्रेष्ठ बंधु उसके पास है यदि व्यक्ति परिश्रम करता है और सफलता नहीं मिलती तो कम से कम यह पश्चाताप तो नहीं होता कि मैंने परिश्रम नहीं किया था।

जो श्रम नहीं करते, उनको सफलता प्राप्त नहीं होती। भला मनुष्य भी जो बैठा रहता है, निकम्मा समझा जाता है। इंद्र उसी की सहायता करता है जो श्रमशील है इसीलिए बराबर श्रम करते रहो। बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है और चलने वाले का सौभाग्य चलने लगता है इसीलिए निरंतर श्रम करो। निरंतर किया गया थोड़ा श्रम भी बड़े परिणाम को देने वाला होता है। छोटी-छोटी उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए भी हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। नोह वेब्स्टर को वेब्स्टर्स डिक्शनरी (webster.s dictionary) तैयार करने में 36 साल लगे थे। एक हुनर को सीखने में व्यक्ति को सालों लग जाते हैं।

A little progress everyday adds up to big results.

जिस प्रकार छोटा सा बीज बड़े वृक्ष का रूप ले लेता है उसी प्रकार नियमित रूप से धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा किया गया श्रम भी बड़े परिणाम को देने वाला होता है।

उद्योगी प्राप्नुयादर्थं यशो वा मृत्युमेव वा।
मृत्युमेव निरुद्योगी न यशो नार्थसंपदः॥

उद्योग करने वाला मनुष्य अर्थ, यश अथवा मृत्यु को प्राप्त होता है किन्तु उद्योगहीन मनुष्य मृत्यु को ही प्राप्त होता है, न यश को प्राप्त होता है और न अर्थ संपदा को।

परिणाम चाहे जो हो किन्तु अच्छे कार्य के लिए सदैव उद्यमशील रहो। एक बार जंगल में आग लग गई। जंगल में रहने वाले सभी जानवर घबरा गये। जंगल में भागदौड़ मच गयी, सभी पशु-पक्षी इधर से उधर दौड़ने लगे। तभी वहाँ एक मनुष्य पहुँचा और एक अजीब सी घटना की ओर उसका ध्यान केन्द्रित हुआ। उसने देखा कि पास ही के तालाब से एक चिड़िया अपनी चोंच में पानी भरकर लाती और आग पर डालती। थोड़ी देर यह देखने के बाद मनुष्य उस चिड़िया से बोला ''अरे! तुम यह क्या कर रही हो?'' चिड़िया ने कहा ''दिखता नहीं वन में आग लगी है उसे बुझाने को पानी डाल रही हूँ।'' मनुष्य ने कहा, ''अरे मूर्ख पक्षी ! क्या तुम्हारे पानी डालने से जंगल की यह आग बुझ जाएगी।'' चिड़िया मुस्कुराकर बोली ''भैया मेरे पानी डालने से आग बुझे या न बुझे किन्तु इतिहास में जब भी मेरा नाम आएगा आग लगाने वालो में नहीं आग बुझाने वालों में आएगा।'' तो सदैव शुद्ध भावनाएँ लेकर अपनी मंजिल की ओर गतिशील रहो। अगली बात है-कोशिश

४. कोशिश :- यदि कई प्रयास करने के पश्चात् भी सफलता हाथ नहीं आ रही हो तब भी अपने प्रयासों को छोड़ना नहीं है। आज

नहीं तो कल हमारे बार-बार प्रयासों से मंजिल की प्राप्ति हो ही जाएगी। एक नाकामयाबी से हारकर बैठने वाले उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच सकते। वास्तव में वे लोग जीवन में सफल होते हैं जो हार नहीं मानते।

The strongest people are not always the people who win, but the people who don't give up when they lose.

हारना बुरा नहीं है पर हारकर वहीं बैठ जाना, आगे चलने के लिए प्रयास नहीं करना बुरा है। सफलताओं के पीछे कई असफलताएँ होती हैं। किसी ने कहा है-

I've failed over and over again in my life & that's why I succeded.

पत्थर पर मारी गई हथौड़े की चोट एक बार में पत्थर को तोड़ ही दे यह आवश्यक तो नहीं बल्कि बार-बार का प्रयास उस पत्थर को चकनाचूर कर ही देगा। एडीसन जिसने बिजली के बल्ब का आविष्कार किया तो वह आविष्कार एक बार में ही नहीं हो गया उससे पहले वे एक नहीं, दो नहीं, दस नहीं, 100 नहीं, पाँच सौ नहीं, हजार नहीं, पाँच हजार नहीं बल्कि दस हजार बार असफल हुए। ऐसे एक नहीं कई उदाहरण हैं जिन्होंने लंबे प्रयासों या कोशिशों के बाद संसार को कुछ उत्तम वस्तुएँ दीं।

मुश्किलों से भागना कोई समाधान नहीं है उनका तो डटकर सामना किया जाना चाहिये। किंतु देखा जाता है जब व्यक्ति हारने लगता है तब भागने को सबसे आसान तरीका समझता है लेकिन ये काम वही करते हैं जिन्हें अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं करना है। जीतने वाले तो चाहे कितनी ही चोटें खाएँ मैदान नहीं छोड़ते बार-बार कोशिश करते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त भी कर लेते हैं। राणा

सांगा जिसके विषय में कहा जाता है जो अपने जीवन काल में एक भी युद्ध नहीं हारा। एक बार जब राणा सांगा रणभूमि में घायल होकर मूर्च्छित हो गए तो उनके मंत्री उन्हें महल लौटा लाए परंतु जैसे ही उन्हें होश आया तो अत्यधिक घायल होने के बावजूद भी वे तुरंत उठकर रणभूमि पहुँच गए। शरीर पर 80 घाव होने के बावजूद भी रणभूमि में डटा रहा। एक चोट खाकर बैठे रहना बुद्धिमानी नहीं।

we may stumble and fall but shall rise again, it should be enough if we did not run away from the battle.

महानुभाव ! प्रकृति योग्य व्यक्तियों की परीक्षा लेकर ही उन्हें सफलता का प्रमाण पत्र प्रदान करती है। प्रकृति व्यक्ति को उतना ही देती है जितना वह सहन कर सकता है। प्रकृति कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करती है। बिना परीक्षा किए यथार्थ की पहचान नहीं होती। स्वर्ण पिट करके, तप करके या खंड-खंड होकर अथवा घिसने से अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करता है। वृक्ष स्वयं शीत, उष्ण, लू, आंधी, तूफान को सहन करके भी दूसरों को सुगंधित पुष्प, मिष्ट फल, सघन छाया एवं प्राणवायु देकर उपकार की प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं। विद्यार्थी जितनी अधिक परीक्षाएँ देता है उतने अधिक प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्राप्त करने का अधिकारी भी हो जाता है। अग्नि परीक्षा देकर वे ही तो कनक पाषाण कुंदन की अवस्था को प्राप्त करते हैं।

शत्रु के सामने न झुकने और कायर बनकर पीठ न दिखाने वाला योद्धा ही तो विजयलक्ष्मी या वीरगति को प्राप्त करने का अधिकारी बनता है। वृक्ष पर लगा हुआ फल प्रचंड धूप और लू के थपेड़ों को सहन करके ही इष्ट और मिष्ट रस में परिवर्तित होता है। परीक्षाओं अथवा संघर्षों के माध्यम से ही उन्नति संभव है। चारूदत्त के विषय

में आपने शायद सुना हो जो पहले तो शास्त्रों का अध्येता था उसे शास्त्र का व्यसनी कहा गया बाद में भोगों की ओर आसक्ति के उद्देश्यों से चाचा रूद्रदत्त बहाने से वेश्या के पास ले गया तब से वेश्या में इतना आसक्त हुआ कि अपने स्वजनों को तो भूल ही गया साथ में कई करोड़ दीनार वेश्या व्यसन में लगा दिए।

जब सत्यता का भान हुआ तब लौटकर आया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। सारा धन, गहने यहाँ तक की घर भी हाथ से जा चुका था। अपनी माँ और पत्नी की स्थिति देखकर अत्यंत दु:खी हुआ तब चारूदत्त धन कमाने के लिए विदेश जाता है। और कुछ वर्षों बाद जब धन कमाकर समुद्री मार्ग से जलयान के द्वारा लौट रहा था तब वह जहाज फट गया और कई सालों में कमाया गया धन एक क्षण में चला जाता है। चारूदत्त अपने प्राणों की रक्षा करते हुए किनारे तक पहुँचता है किन्तु फिर धन अर्जन का निश्चय कर चल देता है।

जब वह धन कमाकर जलयान से लौट रहा था दुर्भाग्यवश जहाज फिर फट गया। फिर वही हुआ चारूदत्त ने मुश्किल से अपने प्राण बचाए और सारा धन समुद्र में समा गया, क्या आप जानते हैं यह चारूदत्त के साथ कितनी बार हुआ एक बार नहीं, दो बार नहीं, चार बार नहीं, सात बार हुआ। परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी, अपने प्रयासों को नहीं छोड़ा और अंत में प्रचुर धन कमाकर, अपने देश लौटा। यदि वहीं अपनी कोशिश समाप्त कर देता, एक या दो बार जहाज फटने के बाद हार मान लेता, हिम्मत खो देता तो क्या कभी पुन: ध न-पद-प्रतिष्ठा अर्जित कर पाता। श्रेष्ठ लोग आपत्ति आने पर भी बार-बार अपने प्रयासों को नहीं छोड़ते।

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचै:,
प्रारभ्य-विघ्न विहता विरमंति मध्या:।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तम गुणा न परित्यजंति॥

नीच मनुष्य विघ्नों के भय से कार्य का प्रारंभ ही नहीं करते हैं, मध्यम मनुष्य प्रारंभ करते तो हैं परन्तु विघ्नों से पीड़ित हो, विरत हो जाते हैं परन्तु उत्तम मनुष्य विघ्नों के द्वारा बार-बार पीड़ित होने पर भी प्रारंभ किए हुए कार्य को नहीं छोड़ते हैं। महानुभाव, लक्ष्य के प्रति दृष्टि रखकर उसी को प्राप्त करने के लिए कार्य करना है।

To succed in your mission, you must have single minded devotion to your goal.

प्रत्येक कार्य को करते समय सावधान रहना है कि क्या वास्तव में यह कार्य मंजिल की ओर ले जा रहा है या उससे विपरीत दिशा में। जैसे मोक्ष पथ पर चलने वाला पथिक अपने लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए सावधानी पूर्वक प्रत्येक क्रिया करता है। डॉक्टर, इंजीनियर, लॉयर, आई.ए.एस., आर्किटेक्ट, एथलीट आदि बनने के लिए उसी प्रकार की कार्यशैली आवश्यक है।

महानुभाव ! एक-एक कदम चलते-चलते बड़ी से बड़ी मंजिल तय हो जाती है शर्त है थककर बैठे नहीं।

यूं ही नहीं मिलती राही को मंजिल,
एक जुनून सा दिल में जगाना पड़ता है।
पूछा चिड़िया से कैसे बना आशियाना तेरा
तो बोली,
भरनी पड़ती है उड़ान बार-बार
तिनका-तिनका उठाना पड़ता है।

प्रयास करना है, बार-बार प्रयास करना है उस मकड़ी की तरह से जो बार-बार दीवार पर चढ़ती है और गिर जाती है। फिर चढ़ती

है फिर गिर जाती है पर अपनी बार-बार की कोशिशों से वह दीवार पर चढ़ने में सफल हो जाती है।

लहरों से डर करके नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती॥
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती हैच
मन का विश्वास रग-रग में साहस भरता है
गिरकर चढ़ना, चढ़कर गिरना नहीं कभी अखरता है॥
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
गोताखोर समुद्र में गोता खूब लगाते हैं
जा-जा करके खाली हाथ लौट फिर वापिस आते हैं,
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती॥
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो,
जब तक न हो सफल नींद चैन की त्यागो तुम
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
किंतु कुछ किए बिना ही जय साकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती॥

महानुभाव, बहुत से व्यक्ति हैं जिन्होंने कई प्रतिकूलताओं के बाद भी अपने बार-बार के प्रयासों से सफलता को प्राप्त किया। फोर्ड मोटर्स के मालिक हेनरी फोर्ड जिन्हें उचित शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला, जिनके द्वारा बनाई प्रथम कार में वे रिवर्स गेयर डालना ही

भूल गए थे देश के सफल व्यक्ति के रूप में उनकी पहचान है। उन्होंने उचित शिक्षा प्राप्त नहीं होने का बहाना नहीं बनाया बल्कि बार-बार की कोशिशों से मंजिल को प्राप्त किया।

इन्फोसिस के पूर्व चेयरमैन नारायण मूर्ति के पास धन नहीं था तब उन्होंने अपनी पत्नी के गहने बेचकर अपना सफर शुरू किया। अल्वा एडीसन जिसको स्कूल से यह कहकर निकाल दिया गया कि यह जीवन में पढ़ नहीं सकता, कुछ कर नहीं सकता विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक बना। वाल्ट डिज्नी जब युवक थे तो कई अखबारों के संपादकों ने उन्हें यह कहकर लौटा दिया कि उनमें योग्यता नहीं है कई स्थानों पर असफलताओं का सामना किया एक पादरी ने उन्हें कार्टून बनाने का काम दिया तब उन्होंने चूहों को देखकर एक विश्व प्रसिद्ध कार्टून बनाया-मिक्की माउस। जबकि इससे पहले उनका तीन बार नर्वस ब्रेकडाउन हुआ था।

विश्व की सबसे बड़ी शीतल पेय पेप्सी कोला भी दो बार दिवालिया हो चुकी है। परंतु आज भी सफलता की श्रेणी में है। ध ीरू भाई अंबानी जिन्होंने अपनी जिंदगी का सफर एक छोटी सी नौकरी से शुरू किया था आज आप रिलाइंस को अच्छे से जानते हैं। लता मंगेशकर जिन पर छोटी सी उम्र में परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ आ गईं फिर भी सफलतापूर्वक जिंदगी का सफर तय किया। आर्थिक रूप से अत्यंत कमजोर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने मानो तलहटी से शुरू कर पर्वत की चोटी तक यात्रा की अर्थात् जीवन में कई प्रतिकूलताओं के होने के बावजूद भी भारत का महान वैज्ञानिक और राष्ट्रपति हुआ।

श्रेष्ठ नृत्यांगना सुधा चंद्रन के पैर नकली हैं। सब्जी बेचकर अपनी आजीविका चलाने वाला युवक, जो पूरे दिन तो सब्जी बेचता और रात में स्ट्रीट लाइट में पढ़ता I.A.S. बना। कैसे-कैसे संघर्षों और

प्रतिकूलताओं का सामना कर व्यक्तियों ने सफलता को प्राप्त किया है। इन लोगों ने बहाने नहीं बनाए कि समय नहीं है, धन नहीं है, लाइट नहीं है, पढ़ाने वाले नहीं हैं, स्कूल अच्छा नहीं है यदि बहाने बनाते तो आज सफल लोगों की पंक्ति से बाहर होते।

हर कार्य एक बार में पूरा नहीं होता उसके लिए प्रयासों की आवश्यकता होती है। पानी की एक बूंद भी जब पत्थर पर बार-बार गिरती है तो उसमें भी छेद कर देती है। जेरॉक्स यानि फोटो कॉपी मशीन के सुझाव को कई कंपनियों ने ठुकरा दिया था परंतु बार-बार की कोशिशों से आज परिणाम आपके सामने है। सफलता को सचमुच चाहने या प्राप्त करने वाला व्यक्ति कभी बहाने नहीं बनाता बल्कि जैसे हो वैसे अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है।

क्वचिद् भूमौ शय्या क्वचिदपि च पल्यंक शयनं।
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः।
क्वचित्कन्याधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो,
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखं॥

कहीं जमीन पर सोना पड़ता है तो कहीं पलंग पर शयन प्राप्त होता है, कहीं शाकभाजी का आहार करना पड़ता है तो कहीं उत्तम चावलों का भात प्राप्त होता है। कहीं कंथा धारण करनी पड़ती है तो कहीं सुंदर वस्त्र प्राप्त होते हैं। ठीक है, कार्य का इच्छुक स्वाभिमानी मनुष्य न दुःख को गिनता है और न सुख को। जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है उसका ध्यान साधनों या अनुकूलताओं पर नहीं बल्कि अपने लक्ष्य पर होता है। अगली बात है सकारात्मक सोच।

५. सकारात्मक सोच :- लक्ष्य का निर्धारण ठीक है, अपने लक्ष्य के प्रति अचल विश्वास भी है, निरंतर उद्यमशील भी है, प्रयास भी जारी है परन्तु यदि बार-बार नकारात्मक सोच आयेगी तो सफलता

मिल नहीं पायेगी। महानुभाव, शब्द पुद्गल हैं हमारे बोले शब्द और हमारी वर्गणाएँ हम पर बार-बार प्रभाव डालती हैं। यदि ये कहा 'मैं नहीं कर पाऊँगा' तो आप तो हो सकता है एक बार कहें परंतु आपके कहे शब्द या नकारात्मक सोच आप पर बार-बार प्रभाव डालती है। इसीलिए सकारात्मक बोलें और सकारात्मक ही सोचें। ''ऐसा क्यों होगा, नहीं होगा, जैसा मैं करूँगा वैसा ही होगा, **I can do everything"** जिसके अंदर से ये आवाज आती है, जिसकी सोच सकारात्मक होती है उसे पूरी दुनियाँ मिलकर भी हिला नहीं पाती। रानी रेवती को सम्यक्त्व से कोई डिगा नहीं पाया। चाहे क्षुल्लक ने नाना प्रकार के रूप बनाकर के उसे डिगाने का प्रयास किया, क्या डिगा पाया, नहीं। अपने आप में जो व्यक्ति अचल होता है तीन लोक की शक्ति भी उसे डिगा नहीं पाती।

सकारात्मक सोच रखोगे तो तुम्हारे शरीर के परमाणु भी उसी प्रकार के हो जायेंगे। हमारा नजरिया, हमारी सोच हमारी सफलता को तय करती है। हमारे सामने मौजूद किसी भी तथ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण उस तथ्य के बारे में हमारा नजरिया होता है क्योंकि हमारी सफलता या असफलता उसी से होती है। सकारात्मक दृष्टिकोण ही सफलता के द्वार खोलता है। साधारण पृष्ठभूमि वाले सफल व्यक्तियों के विषय में उनके पुराने मित्रों से पूछेंगे तो वे यही कहेंगे कि वह था तो सामान्य सा लेकिन उसके अंदर कुछ कर दिखाने का जुनून था, कुछ अलग हटकर करने की इच्छा थी परिणाम यह हुआ कि उसने अपनी मंजिल को प्राप्त किया। शीर्ष पर आने की दृढ़ इच्छाशक्ति और सफल होने का स्वयं का विश्वास ही उन्हें निरन्तर सफलता की चोटी की ओर ले गया।

शुभ और अच्छा घटित होने का विश्वास तथा खुद को और सभी को अच्छा समझने की प्रकृति-यही तो है सकारात्मक दृष्टिकोण।

यदि आधा गिलास पानी रखा हुआ है तो सकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति कहता है कि आधा गिलास भरा हुआ है जबकि नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है आधा गिलास खाली है। सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है ''यह काम बहुत कठिन है किन्तु किया जा सकता है'' जबकि नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है ''यह कार्य किया जा सकता है किन्तु बहुत कठिन है।'' सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है ''मैं गलत था मैं स्वयं को सुधारूँगा'' जबकि नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहता है कि ''मेरी तो गलती ही नहीं है।''

सकारात्मक सोच व्यक्ति को उसकी मंजिल की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ाती है। यह सोच ही उसे हिम्मत देती है आज नहीं तो कल मुझे कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। कभी निराश न हों **''लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए। कभी कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताला खोल देती है। सदा सकारात्मक रहें।''** इसी बात को ध्यान में रख अपनी मंजिल की ओर गतिशील रहो। अभी तक जो हुआ सो हुआ। वह तो past है। लौटकर आ नहीं सकता। अब तो आने वाली सुबह की तैयारी करो।

The past cannot be changed but the future is yet in your power.

अतीत को तो बदला नहीं जा सकता लेकिन आने वाला कल, आपका भविष्य अभी भी आपके हाथ में है। आप स्वयं अपने भविष्य के निर्माता हैं।

महानुभाव ! नकारात्मक सोच वाले दूसरों को दोष देते हैं जबकि सकारात्मक नजरिया कुछ और ही होता है। एक बार एक पिता अपने बेटे को मंदिर ले जा रहे थे। बेटे ने जिद पकड़ ली कि मुझे तो नए जूते चाहिये पर पिता उस तरह के जूते दिलवाने में असमर्थ थे जिस

प्रकार के वह चाहता था। वह तो अपने परिवार का पालन-पोषण ही मुश्किल से कर पाता था। परंतु वह बच्चा रोता-रोता मंदिर पहुँचा जाकर कहने लगा भगवान तुमने मुझे दिया ही क्या है जूते भी नहीं दे सकते, इतनी देर में वह बालक देखता है कि एक बच्चा जो उसके बराबर में खड़ा है वह भगवान से प्रार्थना कर रहा है भगवान मैं आपको अनंत बार नमस्कार करता हूँ आपने मुझे जितना दिया मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ। यह देखते हुए बालक की आँखों से आँसू निकल आए और भगवान के सामने हाथ जोड़कर बोला भगवन् ! मुझे क्षमा करो। कम से कम आपने मुझे शरीर के सारे अंग तो दिए, पैर तो दिए, जूता ही तो नहीं दिया पर इस बच्चे को तो देखो जिसके पैर ही नहीं हैं।

महानुभाव ! सकारात्मक सोचने वाले व्यक्ति कभी किसी को दोष नहीं देते सत्यता तो यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पुण्य और पाप का फल प्राप्त करता है। कैसी भी प्रतिकूलताएँ जीवन में आएँ तब भी उसे यह शिकायत नहीं होती ''मैं हीं क्यों?'' राजा श्रीपाल व 700 व्यक्तियों को कुष्ट रोग हुआ और उन्हें राज्य से बाहर कर दिया गया। आप जानते हैं उन व्यक्तियों को यह रोग क्यों हुआ क्योंकि श्रीकंठ राजा की पर्याय में उन्होंने मुनि को कुष्टी कहा था और 700 व्यक्तियों ने उनकी अनुमोदना की। कर्म कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करते। जो जैसा करते हैं वैसा प्राप्त करते हैं, वैसा भोगते हैं। यह जानने वाले लोग अपनी जिंदगी के प्रत्येक उतार-चढ़ाव में समता रखते हैं, कभी किसी से शिकायत नहीं रखते क्योंकि वे जानते हैं जो हमें आज प्राप्त हो रहा है वह हमने ही अपने लिए तैयार किया था।

ऑर्थर ऐश जो कि टैनिस का महान खिलाड़ी जब अत्यंत बुरी बीमारी एड्स से ग्रसित था जो कि 1983 में हार्ट सर्जरी के दौरान

ब्लड इन्फैक्शन से हो गयी थी तब उसके बहुत से चाहने वालों ने उसे पत्र भेजे उनमें से एक ने पूछा ''भगवान ने इस खतरनाक बीमारी के लिए आपको ही क्यों चुना?'' इस पर Arthur Ashe ने उत्तर दिया कि यहाँ 50 मिलियन बच्चे टैनिस खेलना शुरू करते हैं। जिनमें 5 मिलियन बच्चे टैनिस खेलना सीख जाते हैं। इनमें से 5 लाख प्रोफेशनल टैनिस सीख जाते हैं। उनमें से 5000 सर्किट में आ पाते हैं उनमें से 50 विम्ब्लेडन तक पहुँच पाते हैं। उनमें से भी 4 सेमीफाइनल में और 2 फाइनल तक पहुँच पाते हैं। और जब मैं वहाँ पहुँचा, मेरे हाथ में कप था तब मैंने कभी भगवान से नहीं पूछा कि ''मैं ही क्यों'' तो आज दु:ख के समय में कैसे पूछ सकता हूँ, ''मैं ही क्यों?'' ऐसे व्यक्ति किसी के प्रति कोई शिकायत का भाव नहीं रखते। जो है उसी में अच्छे से अच्छा बनाने का प्रयास करते हैं। कोई बहाना नहीं करते यदि बहाना करते तो जिन व्यक्तियों ने विपरीत परिस्थितियों में सफलता को प्राप्त किया कभी कर ही नहीं पाते।

व्यक्ति की सकारात्मक सोच उसे विजेता बनाती है। गुरूकुल में साथ पढ़ने वाले दो मित्र जिनमें आपस में बहुत स्नेह था, एक दूसरे के सुख-दु:ख को खुद का ही सुख-दु:ख समझते थे, शिक्षा ग्रहण करते हुए बड़े हुए। जिनमें से एक मित्र तो राजा बना और दूसरा सन्यास ग्रहण कर महात्मा। राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करता। न्यायी, पराक्रमी, धार्मिक प्रवृत्ति का था। एक बार इसके राज्य पर बाहरी शत्रुओं का संकट मंडराने लगा। आखिर वह समय आ गया जब शत्रुओं ने उसके द्वार पर आकर दस्तक दे दी। अबकी बार शत्रु कोई छोटा-मोटा राज्य नहीं था बल्कि बहुत शक्तिशाली राज्य था जिसकी सेना उसकी सेना से 10 गुनी थी।

राजा यह जानकर बहुत घबराया की उसकी शत्रु सेना उससे बहुत अधिक शक्तिशाली है। उस राजा ने सोचा कि अब तो मेरी हार

निश्चित है। ''क्या मैं आत्म समर्पण कर दूँ। पर यह तो क्षत्रियों का धर्म नहीं है।'' इसी ऊहापोह में लगे राजा को अचानक अपने बचपन के मित्र की याद आयी जो अब सन्यासी है। राजा जिस मंदिर में वह रहता था उसके पास पहुँचा और सारी बात कह सुनायी। महात्मा ने जब अपनी मित्र की मन:स्थिति को जाना तब वह बोला ''राजन् ! आप मेरे साथ मंदिर में चलो, हार और जीत का फैसला तो अब भगवान ही करेंगे।'' राजा ने पूछा कैसे? वह बोला ''यह रहा सिक्का, जो हमेशा मेरे पास रहता है। मैं इसको उछालूँगा यदि चित् पड़ा तो तुम जीतोगे और पट पड़ा तो तुम्हारा शत्रु।''

राजा ने भगवान से प्रार्थना की और सिक्का उछाला गया। ये क्या सिक्का चित् पड़ा। यह देखते ही राजा को भगवान का जवाब मिल गया यानि जीत। राजा अपनी सेना सहित उत्साह के साथ युद्ध लड़ने गया। और देखते ही देखते राजा ने अपने से 10 गुनी सेना वाले राजा को पराजित कर दिया। विजय गानों के साथ राजा अपने राज्य वापिस लौटा और धन्यवाद कहने सर्वप्रथम अपने मित्र यानि महात्मा के पास पहुँचा। बोला मित्र अगर आप हमें भगवान से उत्तर न दिलवाते तो हम यह युद्ध जीत ही नहीं पाते। महात्मा बोले ऐसा तो होना ही था। भगवान को तो सिक्का चित् करना ही पड़ता। राजा बोला ''क्यों? अगर मुझे हारना होता तो सिक्का पट् पड़ जाता।'' महात्मा बोले ''नहीं'' यह सिक्का कभी पट् पड़ ही नहीं सकता क्योंकि यह मेरा सिक्का है, और मेरा सिक्का कभी पट् नहीं पड़ता। जानते हो क्यों? यह कहते हुए जब महात्मा ने राजा को सिक्का दिखाया तो वह हैरान था कि सिक्का तो दोनों तरफ से चित् वाला था, पट् तो उस सिक्के में था ही नहीं।

महानुभाव ! कहने का आशय यह है कि जब व्यक्ति सकारात्मक सोच के साथ अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ाता है तो विजय श्री

का वरण करता है, सफलता को प्राप्त करता है। ''बड़ी सफलता हासिल करने वाले लोग अपना वक्त व्यर्थ, जटिल किस्म के या विनाशकारी विचारों में उलझ कर नष्ट नहीं करते। वे रचनात्मक ढंग से सोचते हैं और उन्हें मालूम होता है कि उनके सोचने का तरीका ही उनकी कामयाबी को तय करेगा।'' व्यक्ति के सोचने का ढंग उसे सफलता प्रदान करता है। सकारात्मक सोच के व्यक्ति का चेहरा भी खुशनुमा दिखाई देता है, जो अंदर से खुश रहता है, दु:ख में से भी सुख-खुशी का इजहार करता है ऐसे व्यक्ति का सदैव चेहरा खिला दिखाई देता है।

कई बार ऐसे व्यक्ति देखे जाते हैं जो बहुत दु:खी, आँखों से आँसू बहा रहे हैं किन्तु चेहरा खिला है। कई व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्हें हँसी भी आती हो तो पूछना पड़ेगा भाई रो क्यों रहे हो? तब वह कहता है, ''नहीं-नहीं हम तो हँस रहे हैं।'' अच्छा, लग तो ऐसा रहा है जैसे रो रहे हो।'' नहीं भईया, मेरा तो चेहरा ही ऐसा है। नकारात्मक सोच रखोगे तो चेहरा हमेशा मुरझाया सा ही रहेगा।

''उदासी जिन चेहरों का श्रृंगार करती है।
मक्खी भी उस पर बैठने से इंकार करती है॥''

यदि चेहरा मुरझाया रहेगा तो कोई पास भी नहीं आएगा। दो दिन तो उदासी का कारण पूछेगा। तीसरे दिन कहेगा भाई ! ये तो है ही ऐसा। इसके पास जाऐंगे तो मूड ऑफ हो जायेगा दूर रहो तो ही अच्छा है। और सकारात्मक सोच रखोगे तो आँखों से आँसू भी टपकेंगे तो चेहरा खिला-खिला दिखाई देगा। दूसरे व्यक्ति भी सकारात्मक वर्गणाओं से प्रेरित होते हैं। तो जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक घटनाक्रम पर अपनी सोच सकारात्मक रखो, मौत भी आ जाये तो मौत से कहो आना है तो आजा मैं तुझसे डरता हूँ क्या? और यदि मौत के आने से पहले ही डर जाओगे तो मौत के आने के पहले ही मर जाओगे।

एक महात्मा जी जंगल में शाम के समय खड़े होकर ध्यान कर रहे थे, उन्हें एक परछाई जाती हुई दिखाई दी। महात्मा ने पूछा-कौन हो तुम? उस काली परछाई ने कहा-''मैं यमराज हूँ। महात्मा ने कहा-तुम्हारा यहाँ क्या काम है? मैं यहाँ साधना कर रहा हूँ और मेरी साधना के प्रभाव से यहाँ सब शुभ है, मंगल है, कुशल है। तुम किसे लेने के लिए आए हो। यमराज बोला ''आपकी साधना से सब कुशल मंगल तो है किन्तु जिनकी मृत्यु आ गयी, उनको तो मुझे लेकर जाना ही है आयु तो किसी की बढ़ा नहीं सकते। जिसका आयु कर्म पूरा हो गया उसे कौन बचा सकता है। मैं यहाँ महामारी फैलाने आया हूँ जिससे 30 व्यक्तियों की मौत होगी उन तीस व्यक्तियों को मैं लेकर जाऊँगा।'' महात्मा ने कहा ठीक है। तीन दिन बाद पुनः वह काली परछाई आती हुई दिखायी दी। महात्मा ने पूछा-कौन? वह बोला मैं यमराज, अपना काम पूरा करके जा रहा हूँ। महात्मा बोले-झूठ बोलते हो तुम। तुम तो कह रहे थे कि तीस लोगों को लेकर जाऊँगा और गाँव के लोग कह रहे हैं कि तीन सौ तीस व्यक्तियों की मौत हुई यमराज बोला-आपने ठीक सुना है लेकिन मैंने भी झूठ नहीं बोला-मैंने महामारी फैलाई जिससे पहले दिन 4 दूसरे दिन 10, तीसरे दिन 16 व्यक्तियों की मौत हो गई। और 3 दिन में 30 व्यक्तियों की मौत की खबर सुनकर उससे घबराकर 300 तो अपने आप ही मर गये।

तो महानुभाव ! मौत के आने से पहले ही लोग मर जाते हैं। मौत भी आ जाये तब भी डरना नहीं है, मौत भी एक बार को काँप जायेगी कि ऐसे साहसी व्यक्ति को मैं उठाऊँ या न उठाऊँ। नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति प्रतियोगिता या परीक्षा से पहले ही फेल हो जाता है। या अच्छी रैंक प्राप्त नहीं कर पाता। **''युद्ध में सदैव वे ही विजयी नहीं होते जो अधिक बलशाली और तेज हैं। आगे या पीछे वह व्यक्ति विजयी होता है, जो सोचता है कि वह विजयी होगा।''**

नकारात्मक सोच का व्यक्ति कहता है कि प्रकृति का अन्याय तो देखो फूलों के साथ काँटे लगा दिये, सुंदर इंद्रायण फल में कड़वापन, सुंदर रत्नों में कठोरता, गुड़ में सांवलापन, मेघों में श्याम, कुओं को गहरा, अग्नि में धूम, पवन को अस्थिर बना दिया। जबकि सकारात्मक सोच का व्यक्ति कहता है प्रकृति कितनी उदार है, उसकी व्यवस्था व्यवस्थित व सम्यक् है। देखो-कठोर इक्षुदंड में भी मिठास, कड़वे इंद्रायण फल में भी सुंदरता, कीचड़ में भी कमल, काँटों में भी गुलाब, काली लवंग में भी सुगंधि, सांवले, गुड़ में भी मिठास, खारे नमक में भी धवलता, कठोर पर्वतों में भी शीतल जल के झरने, श्याम मेघों में भी जल, जघन्यतम कूपों में भी जल, हवा में भी निः संगता है। अब आप स्वयं को देखिये कि आप कैसी सोच के व्यक्ति हैं। यदि कहीं थोड़ा भी नकारात्मक प्रभाव दिखता है तो उसको सकारात्मक बनायें **Thinkpositive, be optimist.**

सकारात्मक और आशावादी व्यक्तियों के जीवन में उलझनें होती तो हैं पर वे उन्हें बढ़ाते नहीं हैं। अपनी सकारात्मक सोच और आशावादी नजरिए से उस 10 प्रतिशत परेशानी को वहीं समाप्त कर लेते हैं। एक व्यक्ति जिसे जल्दी ही ऑफिस जाना था उसकी बेटी उसके लिए चाय लेकर आई। गलती से चाय उस व्यक्ति की शर्ट पर गिर गयी। जिससे वह व्यक्ति बहुत गुस्सा हुआ, उसकी बेटी रोने लगी। वह व्यक्ति उठा अपनी शर्ट साफ करने लगा। बहुत देर कोशिश करने के बाद जब वह साफ नहीं हुई तो शर्ट बदल ली। वह ऑफिस के लिए लेट हो रहा था। उसकी महत्वपूर्ण मीटिंग थी। घर से बाहर जाने लगा तो उसकी पत्नी ने कहा आज बिटिया का एक्जाम है रोते-रोते उसकी बस छूट गई है, उसे स्कूल छोड़ आओ। लेट होने की वजह से वह व्यक्ति अपनी कार स्पीड से चला रहा था। स्पीड की वजह से उसका 1000 रु. का चालान कट गया। बेटी फिर भी एक्जाम

टाइम से लेट पहुँची। वह व्यक्ति भी ऑफिस के लिए लेट हो रहा था जल्दबाजी में important papers घर पर ही भूल गया। ऑफिस पहुँचा तो पहले ही बहुत disturb था उस वजह से सामने बॉस बैठा है ध्यान ही नहीं दिया और सीधे निकल गया, जिसके लिए उसे boss की डाँट खानी पड़ी। papers घर पर छूट जाने की वजह से project भी हाथ से चला गया। शाम को घर पहुँचा तो बेटी से उसके एक्जाम के बारे में पूछा तो बताया बिगड़ गया और छूट भी गया।

महानुभाव ! इस व्यक्ति ने अपनी 10 प्रतिशत problem को 90 प्रतिशत खुद बढ़ाकर 100 प्रतिशत कर लिया। जबकि सकारात्मक व आशावादी नजरिए का व्यक्ति जब चाय गिरी थी तब ही कह देता, ''बेटा ध्यान से आपके लगी तो नहीं। कोई बात नहीं मैं अभी शर्ट चेंज कर लेता हूँ।'' तो यह 10 प्रतिशत बात यहीं पूरी हो जाती। आगे जो हुआ वह होता ही नहीं। अगली बात है व्यवहार, शिष्टाचार, सदाचार

६. व्यवहार :- संसार में वही व्यक्ति सबसे अच्छा है जो अपने व्यवहार से, शिष्टाचार से, वाणी से सबके हृदय को जीत लेता है। शिष्टाचारी व्यक्ति की चमक ऐसी है जो लोगों को पहली ही भेंट में आकर्षित कर लेती है। महानुभाव ''कुछ भी बनने से पहले एक अच्छे इंसान बनो।'' सही इंसान बनने के लिए शिष्टाचार, सदाचार की आवश्यकता है। और ऐसा व्यक्ति ही सही विजेता बन सकता है। जॉर्ज वाशिंगटन का कहना था, ''मुझे उम्मीद है कि मेरे पास उस चीज को कायम रखने लायक दृढ़ता और सद्‌गुण हमेशा बने रहेंगे जिसे मैं सभी उपाधियों से अधिक मानता हूँ। और वह चीज है एक ईमानदार आदमी का चरित्र।'' चारित्रवान्, शिष्टाचारी व्यक्ति विनयी, आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, आत्मसंयमी होता है। उसकी वाणी में मिठास होती है।

महानुभाव ! व्यक्ति की वाणी उसके व्यक्तित्व का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। **''इंसान एक दुकान है, जुबान उसका ताला। ताला खोलने पर ही मालूम चलेगा कि दुकान कोयले की है या हीरे की।''**

व्यक्ति की वाणी उसके व्यक्तित्व का पैमाना है। आपने एक कहानी सुनी होगी-जिसमें राजा, मंत्री, कोतवाल जंगल में जाकर बिछुड़ जाते हैं। वहीं जंगल में नेत्र ज्योति से विहीन महात्मा जी कुटिया में रहकर साधना करते थे। कोतवाल सर्वप्रथम महात्मा जी के पास पहुँचता है और कहता है ओ अंधे ! क्या तुम्हारी कुटिया के आस-पास से मेरे साथी गुजरे हैं? महात्मा जी ने उत्तर दिया नहीं कोतवाल जी। थोड़ी देर बाद महात्मा जी के पास मंत्री पहुँचा और बोला, सूरदास जी! क्या यहाँ से कोई गुजरा है। महात्मा बोले हाँ, अभी-अभी कोतवाल जी यहाँ से गए हैं। थोड़ी देर बाद राजा वहाँ पहुँचता है और कहता है, हे प्रज्ञा चक्षु श्रमण ! क्या यहाँ से कोई गुजरा है? महात्मा बोले हे राजन् ! मंत्री व कोतवाल यहाँ से कुछ ही समय पहले निकले हैं। राजा ने पूछा महात्मा जी आप तो नश्वर संसार को देख नहीं सकते तब आपने कैसे जाना कि मैं राजा हूँ और जो अभी यहाँ से गुजरे हैं वे कोतवाल और मंत्री हैं। महात्मा जी बोले राजन्! आप सबकी बोली से। ओ अंधे ! यह संबोधन सुना तो समझ गया कोतवाल होगा। सूरदास जी ! सुना तो समझ गया मंत्री था। प्रज्ञा चक्षु श्रमण सुना तो समझ गया यह शब्द तो केवल राजा ही बोल सकता है। कहने का आशय यह है कि जो व्यक्ति जितना बड़ा होता है, वय में नहीं गुणों में, उसकी वाणी उतनी ही शिष्ट और मिष्ट होती है।

मीठे बोल बोलिए क्योंकि
अल्फाजों में जान होती है।

इन्हीं से आरती, अरदास
और इन्हीं से अजान होती है।
यह समुंदर के वे मोती हैं।
जिनसे इंसानों की पहचान होती है॥

पुरुदेव चंपू में अनुवीचि भाषण कला को झरने की उपमा दी। अर्थात् व्यक्ति की वाणी ऐसी हो जो सामने वाले व्यक्ति के कठोर हृदय में भी उसी तरह स्थान बना ले जिस प्रकार झरना कठोर चट्टानों या पहाड़ों में अपना स्थान बना लेता है। महानुभाव ! सदाचारी व्यक्ति जहाँ-जहाँ से गुजरता है उसके गुणों की सुगंधि से वातावरण महक उठता है। व्यक्ति का व्यवहार, सदाचार, शिष्टाचार उसे उच्च पद के लिए तैयार करता है यदि बिना सुव्यवहार के कोई पद भी मिल गया तब भी वह सफलता नहीं कहलायेगी। अच्छे पद के साथ-साथ अच्छा व्यक्तित्व भी हो, शिष्टाचारी हो। हमारा छोटा-छोटा अच्छा व्यवहार ही हमें जीवन में आगे ले जाएगा।

शिष्टाचार का सामान्य सा मतलब देखें तो माता-पिता अथवा सभी बड़े लोगों का आदर सम्मान करना, पलटकर कभी जवाब नहीं देना, किसी व्यक्ति की जरूरत में सहायता कर देना यदि कोई रुग्ण या अपंग व्यक्ति लाइन में खड़ा है तो उसे पहले मौका दे देना। गलती हो जाए तो 'सॉरी' और कृतज्ञता ज्ञापित करनी हो तो 'थैंक यू' या 'ध न्यवाद' बहुत प्यारे शब्द हैं। और यह सब तभी हो सकता है जब वह विनयी हों। घर में शिष्ट व्यवहार करना उतना ही जरूरी है जितना कि बाहर वालों के साथ। घर में दूसरों का ख्याल रखने और अच्छा व्यवहार करने से अपनेपन की, प्रेम की भावना वृद्धिंगत होती है।

महानुभाव ! जीवन में नि:स्वार्थ भाव से सभी का अच्छा करने वाला जीवन में कभी हार का सामना नहीं करता, पराजय कभी उसके मार्ग में नहीं आती। ''किसी से उम्मीद किए बिना उसका अच्छा करो क्योंकि किसी ने कहा है-

''जो लोग फूल बेचते हैं, उनके हाथ में खुशबू अक्सर रह जाती है....''

एक बार एक बालक खेलता हुआ थोड़ी दूर निकल गया। वहाँ वह कुएँ में बोला ''कौन है यहाँ? आवाज लौटकर आई ''कौन है यहाँ?'' बालक बोला 'मैं' तुझे छोडूँगा नहीं''। आवाज आई ''मैं तुझे छोडूँगा नहीं'' बालक बोला ''मैं तुझे मार डालूँगा'' आवाज लौटकर आई ''मैं तुझे मार डालूँगा'' यह सुनकर बालक डर गया और भागता-भागता माँ के पास पहुँचा और सब बात कह सुनायी। माँ बच्चे की पूरी बात समझ गई और बोली चलो बेटा कुएँ के पास, मैं देखती हूँ वहाँ कौन है? बेटा माँ को कुँए के पास ले गया। माँ बोली बेटा आवाज लगाओ ''भैया'' बेटे ने आवाज लगायी ''भैया'' तो आवाज लौटकर आई ''भैया''। माँ ने बेटे से कहलवाया ''भैया में तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।'' आवाज लौटकर आई ''भैया मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।'' पुनः बोला ''चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' आवाज लौटकर आयी ''चिंता मत करो मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' वह बालक यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला माँ मैं तो सोचता था यहाँ मेरा दुश्मन है पर ये तो मेरा मित्र है। महानुभाव ! यह दुनिया भी एक कुँए की तरह से है। हम जिस तरह का व्यवहार दुनियाँ में लोगों के साथ करते हैं। वे लोग भी हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। हमारा मिष्ट और शिष्ट व्यवहार हमें उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर करता है। यहाँ तक कि यदि अपने साथ भी कोई बुरा कर रहा है तो उसका भी यदि हो सके तो अच्छा करें।

जो तो को काँटा बोय, वा को बो तू फूल।
तोय फूल के फूल हैं, वा को हैं त्रिशूल॥

हमारा जल जैसा सरल और सहज व्यवहार सामने वाले के चट्टान रूपी हृदय को द्रवीभूत कर देगा। पानी बहुत सरलता से पहाड़ों

में अपना स्थान बना लेता है। शिष्टाचारी व्यक्ति भी कठोर व्यवहार वाले व्यक्ति के हृदय में सरलता से स्थान बना लेते हैं। जो व्यक्ति सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करता है वह प्रत्येक परिस्थिति में मुस्कराते रहने का साहस पा जाता है। दुनियाँ में उसका व्यक्तित्व महकता है।

''प्रेम इंसान को कभी मुरझाने नहीं देता और नफरत कभी इंसान को खिलने नहीं देती।'' व्यक्ति का प्रेमपूर्ण व्यवहार एक ऐसी चुंबक है जो सभी व्यक्तियों को उसकी ओर आकर्षित करती है। व्यक्ति का (helping nature) सहायतापूर्ण व्यवहार उसकी स्वयं की सफलता का सोपान है। आपके द्वारा की गई एक छोटी सी सहायता उस व्यक्ति की जिंदगी में बड़ा परिवर्तन ला सकती है।

मैं ''किसी से'' बेहतर करूँ, क्या फर्क पड़ता है।
मैं ''किसी का'' बेहतर करूँ, बहुत फर्क पड़ता है॥

महानुभाव ! जीवन जीना एक बात है और अच्छा जीवन जीना दूसरी बात है। जीवन तो संसार का प्रत्येक प्राणी जीता है पर अच्छा जीवन कोई-कोई ही जी पाता है। और अच्छा जीवन जीने वाले ही संसार में सम्मानीय होते हैं, संसार के लिए आदर्श माने जाते हैं। इस अच्छा जीवन जीने का नाम है 'सदाचार'। शरीर से अच्छी क्रिया, शिष्ट व मिष्ट वाणी, मन में सद्विचार और सत् आहार अर्थात् शुद्ध आहार, ये चार बातें जिसके जीवन में होती हैं वह सदैव सदाचारी होता है। व्यवहार ऐसा हो यदि व्यक्ति आपसे एक बार मिले तो वह आपसे दोबारा मिलने की चाह रखे।

एक व्यक्ति ट्रेन में यात्रा कर रहा था, दूसरा व्यक्ति अगले स्टेशन से चढ़ा और चढ़ते ही इतने बुरे शब्दों का प्रयोग किया जो उचित नहीं थे और बड़बड़ाता हुआ बैठ गया। किसी ने कुछ नहीं कहा, जब वह उतरने लगा तब ट्रेन में बैठे एक व्यक्ति ने उससे

कहा-भैया ! तुम्हारी कोई चीज रह गई है, वह लेते जाओ। तब उसने पूछा क्या रह गया? व्यक्ति ने कहा ''आपका बुरा व्यवहार-जो कि इस ट्रेन में बैठे सभी व्यक्तियों को जीवन भर याद रहेगा। जो व्यवहार तुमने किया है वह कोई भूल नहीं सकता।'' बुरा व्यवहार और अच्छा व्यवहार व्यक्ति के जीवन में स्थाई छाप छोड़ने वाला होता है। व्यक्ति चला जाये किन्तु उसका व्यवहार जीवित रहता है।

यदि संक्षेप में कहा जाए सदाचार के विषय में तो सदाचार का अर्थ है अपनी अच्छाईयों को प्रतिकूलता में भी नहीं छोड़ना। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सद्आचार, विचार, व्यवहार और आहार को नहीं छोड़ना। कितनी ही रानियाँ और राजकुमारी हुईं जिन्होंने कैसी भी परिस्थिति क्यों न हुईं परंतु अपने चरित्र की, अपने शील की रक्षा की। अनंगसरा जो 3000 वर्ष तक जंगलों में रही फल-फूल खाकर अपना जीवन यापन किया परन्तु कभी अभक्ष्य पदार्थों को छुआ तक नहीं, अपने चरित्र को निष्कलंकित रखा। चंदना, अंजना, सीता, मनोवती, सोमा, मनोरमा आदि का नाम अपने सदाचार, सद्चरित्र के कारण आज भी प्रसिद्ध है। रानी सिंधुला ने हाथ में जल लेकर अपने रोगी पति पर डाला तो वह स्वस्थ हो गया यह उसके सद्चरित्र का ही प्रभाव था। नीली के पैर रखते ही बंद नगर द्वार खुल गया यह भी उसके सदाचार का ही प्रभाव था।

राजपूताने में राजा की मृत्यु के बाद रानियाँ अपने चरित्र, अपने शील, अपने आचरण की रक्षा के लिए जौहर कर देती थीं, सती हो जाती थीं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने शील की रक्षा की, आज तो परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल हैं। कुछ राजा, सेठ आदि भी हुए जिन्होंने सदैव अपने धर्म का पालन किया। महाराणा प्रताप जब राज्य छोड़ जंगल में रहे तब उन्होंने घास की रोटियाँ खाना पसंद किया परंतु माँस की बोटियाँ नहीं। सेठ सुदर्शन जिन्होंने सूली पर

चढ़ना तो स्वीकार किया परंतु अपने धर्म, शील की रक्षा की। राजा छत्रसाल, राजा हरिशचंद्र आदि अनेक राजा महाराजा हुए जिन्होंने युद्ध में अपनी मर्यादाओं, अपने धर्म अपने सदाचरण को नहीं छोड़ा। व्यक्ति की सबसे बड़ी संपत्ति उसका character होता है कहा भी है।-

If character is lost everything is lost.

कहा है **'आचरण किं न साधयेत्'** संसार में ऐसा कौन सा पदार्थ है जो आचरण से सिद्ध न हो सके, सदाचार से प्राप्त न हो सके। तुम उस वस्तु के काबिल बनो वह वस्तु तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी, व्यक्ति भगवान् से मांगता है, कभी-कभी वही मांगता है जो उस वस्तु के काबिल नहीं है। यदि तुम काबिल नहीं हो और वस्तु कैसे भी तुमने प्राप्त कर ली तो तुम उसे रख नहीं पाओगे, सदुपयोग नहीं कर पाओगे। तो स्वयं काबिल बनना है, अपने लक्ष्य के योग्य बनना है। आकाश की ऊँचाइयों को छूने से पहले स्वयं को तैयार करना है।

बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है,
परन्तु अच्छा आदमी बनना बहुत बड़ी बात है।

सदाचार क्या है-यही कि अपने धर्म को, संकल्पों को, नियमों को नहीं तोड़ना। पहले बड़े-बड़े युद्ध होते थे परंतु उसे भी राजा-महाराजा नियमपूर्वक लड़ते थे। क्षत्रिय राजा कभी पीठ पर वार नहीं करते थे। निः शस्त्रों पर वार नहीं करते थे हमेशा अपनी मर्यादाओं का पालन किया। पृथ्वीराज चौहान ने मौहम्मद गौरी को एक बार, चार बार या आठ बार नहीं बल्कि सोलह बार क्षमा प्रदान की। आज भी बहुत से लोग हमारे पास आते हैं जो अब्रोड (विदेश) गए एक लंबे समय तक रहे, परंतु फलादि लेकर रहे अपने धर्म, मर्यादा, आचरण की रक्षा

सदैव की। कितने बच्चे जो आज इंजीनियर हैं, कंपनियों में जॉब कर रहे हैं परंतु रात्रि भोजन ग्रहण नहीं करते तो नहीं करते, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करते तो नहीं करते। परिस्थितियाँ कमजोर या मूर्ख व्यक्तियों पर राज्य करती हैं। जबकि बुद्धिमान लोग उनको शस्त्र बनाकर सफलता के मार्ग में आगे बढ़ते हैं।

बेबस मजबूरी लाचारी किसके साथ नहीं होती।
बोलो ऐसी धरा कहाँ है जहाँ पर रात नहीं होती॥

तो महानुभाव ! सद्कार्य, सद्व्यवहार, सद्विचार और सद्आहार यही कहलाता है सदाचार। सदैव इसका पालन यत्नपूर्वक करें।

७. सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता, स्नेह का भाव व सहयोग की भावना-यदि कोई व्यक्ति यत्किंचित् भी सहयोगी हो तो उसके प्रति कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। बड़ों के प्रति दिखाई गयी कृतज्ञता, कृतज्ञता नहीं वह तो झुकना है। यदि वास्तविकता में दिखाना चाहते हो तो अपने छोटों के प्रति दिखाओ तब तो वास्तव में बड़ों के प्रति भी दिखा सकते हैं। कृतज्ञता वही ज्ञापित कर सकता है जिसने अहंकार को अपने मार्ग की रुकावट नहीं बनने दिया हो।

कई बार हम लोग अपने नजदीकी व्यक्तियों को कृतज्ञता ज्ञापित करना भूल जाते हैं। चाहे माँ हो या पिता, पति हो या पत्नी, भाई हो या बहन, मित्र हो या अन्य संबंधी परंतु उन सभी को कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए। कहना चाहिए यदि आप नहीं होते तो आज मैं इस पद पर आसीन नहीं होता। माता-पिता से कहना चाहिए कि आपके दिए संस्कारों ने ही तो मेरी सफलता से मुलाकात करायी है। जीवनसाथी से कहें कि आपकी प्रेरणा जो समय-समय पर हमें मिलती रही उससे हम यह मुकाम हासिल कर सके। अपने भाई-बहनों से कहें कि आप सभी के स्नेह से, प्रार्थनाओं से आज मैंने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

अपने शिक्षकों से कहें कि आपके मार्ग दर्शन से ही हम इस कार्य को करने में सफल हुए। आप सोचकर देखिए क्या वास्तव में ऐसा नहीं है। एक जिंदगी को संवारने में कितने लोगों का योगदान होता है। उन सभी को आभार प्रेषित करें।

हम कृतज्ञी तो बने परंतु किसी पर अहसान न जतायें। अहंकार के वृक्ष पर न चढ़ें यह कहकर कि यदि मैं नहीं होता तो आज यह चैन से नहीं रह रहा होता, इसके पास मकान नहीं होता, यह परिवार का पालन-पोषण नहीं कर रहा होता। श्रेष्ठ और सफल व्यक्ति वही होते हैं जो सबके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं और किसी पर अहसान नहीं दिखाते। भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जब वे प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए तो उन्होंने कहा था कि मैं आज यहाँ पर अपनी माँ के आशीर्वाद की वजह से हूँ।

८. सफलता का सदुपयोग :- जीवन में जो प्राप्त हुआ है, जो भी उपलब्धि हुई है उसका सदुपयोग करें। जैसे धन से धन आता है। वैसे ही एक सफलता दूसरी सफलता की आधार शिला है। यदि वह पहली सफलता का सदुपयोग करेगा तो दूसरी सफलता भी स्वयं आ जाएगी। एक व्यक्ति पहले अपने ग्राम पंचायत का मैम्बर बना, वहाँ से आगे बढ़ा चेयरमैन बना और आगे बढ़ा विधायक बना, सांसद बना, प्रधानमंत्री बना तो उसकी पहली सफलता, दूसरी सफलता का कारण बनती चली गयी। उसने पहली सफलता का सदुपयोग किया। लोगों ने सोचा यदि यह यहाँ ऐसा अच्छा कार्य कर रहा है तो आगे चलकर हमारे लिए और भी अच्छा करेगा, रक्षा करेगा, सहायता करेगा। और जो सत्ता को पाकर उसका दुरुपयोग करता है, पाँच साल तो बैठेगा गद्दी पर छठवें साल उतार दिया जायेगा।

महानुभाव ! यदि उद्देश्य पवित्र हों, भावनाएँ पवित्र हों तो व्यक्ति उसकी पूर्ति आसानी से कर सकता है। पवित्र लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त

कर सकता है। यदि लक्ष्य, उद्देश्य पवित्र भी है तो उसके साधन या वे वस्तुएँ जो उसकी प्राप्ति में सहायक हो सकें वे भी पवित्र हों। पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पवित्र साधनों का प्रयोग करें वरना यदि साधन अच्छे न हों तो उद्देश्य भी पवित्र नहीं रह पाता। शुद्ध एवं सही मार्ग से प्राप्त की गई सफलता का दुरुपयोग भी नहीं होता। अपने कदम अपनी मंजिल की ओर इस प्रकार बढ़ायें कि यदि पीछे चलने वाले आपके पद चिह्नों पर चलें तो उनके कदम फिसलें नहीं। पीछे वाले भी सुरक्षित उस मंजिल को प्राप्त कर लें। चलो तो ऐसे चलो कि लोग आपका अनुसरण करना चाहें।

If your action inspire others to dream more, learn more, do more and become more, you are a leader.-john q. Adame

किसी उपलब्धि को प्राप्त करने से ज्यादा जरूरी है उसके सदुपयोग की कला। एक व्यक्ति व्यापार करने विदेश गया वह अपने साथ गाय को भी विदेश ले गया। विदेश में व्यापार करने की आज्ञा लेने वह वहाँ के राजा के पास गया। उनके लिए भेंट में वह गाय के दूध से बनी मिठाईयाँ लेकर गया। विदेश में गाय जैसा कोई जानवर नहीं था वहाँ उसको कोई जानता नहीं था पहली बार ही राजा ने ऐसी स्वादिष्ट मिठाई खायी। अब तो राजा के संकेतानुसार वह व्यक्ति रोज राजा के लिए मिठाईयाँ लाता। इस प्रकार 6 महीने व्यतीत हो गए। अब व्यक्ति जाने की आज्ञा लेने राजा के पास पहुँचा।

राजा ने उससे पूछा ये सुंदर-सुंदर फल तुम किस वृक्ष से लाये हो? व्यक्ति ने कहा महाराज! मेरे पास एक चेतन वृक्ष है वह यह फल देता है। राजा ने कर के रूप में वह वृक्ष यानि गाय व्यक्ति से ले ली। और अपने सैनिक को आज्ञा दी की यह वृक्ष जब भी फल दे मेरे पास ले आना। उनको दुग्ध दोहन की विधि तो पता नहीं थी।

गाय ने गोबर करा तो सैनिक उसी को टोकरी में रख राजा के समक्ष ले आया। राजा को तीव्र दुर्गंध आयी और सैनिक को वहाँ से भगा दिया तथा सैनिकों को आज्ञा दी उस व्यक्ति को पकड़ने की। उसे पकड़कर लाया गया। बोला महाराज मैंने कोई धोखा नहीं दिया मैं इसी वृक्ष से फल लाकर देता हूँ।

उसने दूध दोहन कर उसकी मिठाई बनाई, सभी ने मिठाई खाई तब उसने उनको विधि सिखाई। कहने का आशय यह है कि व्यक्ति को उपलब्धि का सदुपयोग करना न आये तो वह भी किसी काम की नहीं है। अपनी उपलब्धियों का प्रयोग स्व-पर हित के लिए करें।

एक बार एक बच्चा हमारे पास आया 9th class का था। बोला महाराज जी, आज मैं क्लास में दो नम्बर से फर्स्ट आता-आता रह गया पर मैं फर्स्ट आकर भी इतना खुश नहीं हूँ जितना की सेकिंड आकर। मैंने उससे इसका कारण पूछा तो बोला महाराज जी आज हमारे स्कूल में कॉपियाँ दिखाई जा रही थीं सारी कॉपी दिखाई जा चुकी थीं बस संस्कृत की बाकी थी। हमारे सब विषयों के नं. जोड़े तो मैं फर्स्ट आ रहा था। क्लास के दूसरे लड़के के 2 नं. कम थे। पर जब संस्कृत की कापी दिखाई मैंने संस्कृत कॉपी के मार्क्स जोड़े तो मैम ने मुझे तीन नम्बर ज्यादा दिए हुए थे। पहले तो मैंने सोचा मैम से ना कहूँ वरना मैं IInd हो जाऊँगा पर मेरा मन नहीं माना और मैंने मैम को जाकर बता दिया। मैं Ist तो नहीं आया पर उससे भी ज्यादा खुश हूँ मेरे प्रिंसिपल ने असैम्बली में मेरा सम्मान कराया।

महानुभाव ! बात तो बहुत छोटी है पर तथ्य बहुत बड़ा है। वह क्लास में Ist तो नहीं आया पर फिर भी वह विजेता बना। अपने नैतिक मूल्यों पर खरा उतरा। लारेंस लेमिएक्स, ओलंपिक में नाव की रेस में भाग लेने वाला प्रतियोगी। रेस के दौरान उसका एक प्रतियोगी मुसीबत में फंस गया। पर लारेंस उसकी मदद के लिए रुक गया। सारा

विश्व इसको देख रहा था उन्होंने जीतने की इच्छा से ज्यादा दूसरे के जीवन की रक्षा करने को प्राथमिकता दी। नाव रेस में हार जाने के बाद भी वे विजेता थे। सारी दुनिया ने उनका सम्मान करा। कोई जीतने के बाद भी हार सकता है कोई हारकर भी जीत सकता है। **''किसी सम्मान के योग्य होते हुए भी उसे न पाना, अयोग्य होकर उसे पाने से बेहतर है।** सही सम्मान सम्मानित होने की योग्यता में है, न कि सम्मान पाने में।''

जीतने से ज्यादा जरूरी इज्जत और सम्मान के साथ जीतना और उस जीत के काबिल होना है। बेईमानी की जीत से सम्मान की हार अच्छी है। ''कई बार जीत से ज्यादा हार में विजय होती है।'' जीवन के प्रत्येक पग पर सभी को सम्मान दें चाहे वे आपके प्रतियोगी ही क्यों न हों। क्योंकि यह हमारे सफल व्यक्तित्व को दर्शाता है। तो जीवन ऐसा जीयें कि लोग भी आपके जीवन को आदर्श जीवन मानें। उसका अनुसरण करें। सफल व्यक्ति बनें और फिर आगे आने वाली पीढ़ियों का सही मार्गदर्शन करें।

नोट